हंसन का एक देश है...

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश जनवरी 1961 में प्रकाशित प्रवचन)

अब कुछ करले नाम कमाई ।
अब कुछ करले नेक कमाई, तेरी बनत बनत बन जाई ।
बहुत गई थोड़ी है बाकी, यह भी बीतत जाई ।
अब भी तू कुछ चेत ले मूर्ख तोहे राम दुहाई ।
यह जग तेरे काम न आवे भाड़ पड़े चतुराई ।
जो लाया था खोय के चला है हां क्या लेके जाई ।
अब भी जो तू नाम सम्भाल ले, तेरी बिगड़ी बात बन जाइ ।
कंचन काया को हे मूर्ख विषय धूल लिपटाई ।
हरि सिमरन बिन हे शहिन्शाह सकल वस्तु है काई ।
अब कुछ कर ले नेक कमाई, तेरी बनत बनत बन जाई ।

दुनिया में तीन किसम के इल्म हैं, इन्सान के लिए। सबसे पहिला इल्म (ज्ञान) वह इस जिस्म के मुतल्लिक है। यह (मनुष्य) देहधारी है। यह (देह) पहिला संगी और साथी है दुनियां में आते हुए, जो हमारे साथ दुनियां में आता है। हम देह लेकर आते हैं। तो पहिले सबसे पहिला इल्म जिसको हमने जानना था, वह यह शरीर है। हम शरीरधारी हैं। यह देह बड़े भागों से मिलती है। मनुष्य जीवन को माना गया है भई कि चौरासी लाख जीया जून की यह सरदार जूनी है। Highest rung in creation. इसमें सबसे बड़ा काम जो हमने करना है या कर सकते हैं वह यह है कि अपने आपको प्रभु के चरणों में जोड़ दे, पूर्णता को, Perfection को पा जाये, उस प्रभु के पाने के लिए, पहिले यह अपने आपको जाने, क्योंकि आत्मा ही से प्रभु का अनुभव हो सकता है। न वह इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से। तो यह बड़ा सुनहरी अवसर कहो, Golden opportunity कहो,

मनुष्य जीवन पाने की हमको मिली है, बड़े भागो से। तो पहिले इस शरीर की रक्षा करो। आपको पता है पुरातन जमानों में जो आश्रम होते थे ना ऋषियों के, तो पहिली विद्या जो बच्चों को सिखाई जाती थी। वह आयुर्वेदिक विद्या थी, यह शरीर कैसे चल सकता है, कायम रह सकता है, और यहां तक लिखा है कि, बारह वर्ष के बच्चे को वैद्य क्या कहे, याने बारह वर्ष का बच्चा हो जाये तो उसको किसी वैद्य की जरूरत नहीं, उसको इस जिसम को जानना चाहिए, यह कैसे चल सकता है, कैसे Maintain होता है। यह मैंने अभी अर्ज किया था। एक सुनेहरी वक्त हमारे हाथ में आया है। इसमें हम अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ सकते हैं। बाकी किसी और जूनी में नहीं। हमें यह भी पता नहीं मुआफ करना, सालों हो गए, किसी को दस साल, बीस साल, पचास साल इससे भी ज्यादा हो गए, हमें यह नहीं पता यह जिसम क्या है ? यह कैसे कायम रह सकता है ? इसमें कैसे बीमारियाँ चलती है ? कैसे वह दूर हो सकती है ? हमें इस बात का इल्म नहीं। तो पहिला इल्म यह इस देह का है। महापुरुष यह नहीं कहते कि इस जिसम को कष्ट दो या भाड़ में झोंक दो बल्कि यह कहते हैं, यह एक बड़े भागो से चीज मिली है। इसकी रक्षा करो। इसकी रक्षा ही से बाकी इल्म चलेंगे। समझे ! किसलिए रक्षा करो ? महापुरुषों ने इस बात का जिक्र किया है ।

घट बसें चरणार बिन्द रसना जपे गोपाल।
नानक तिस ही कारणें इस देही को पाल ॥

तुम्हारे में प्रभु के चरणों का निवास हो, तुम उसके देखने वाले बनो, उसको देखकर उसके गुणानुवाद गाने वाले बनो।

जब देखा तो गावा, तो गावे का फल पावा ।

तुम्हारी वह आँख बन जाए जिससे वह प्रभु नजर आता है। उसके देखने वाले बनो। उसके गुणानुवाद गाने वाले बनो। इसलिए इस देह को पालो। क्योंकि यह, प्रभु को देखने का सवाल जो है, यह सिवाय मनुष्य जीवन के और कहीं नहीं हो सकता। नीची जूनी है, मगर उनमें आपके अन्तर वह चीज नहीं है जिससे कि तुम उसको (प्रभु को) जान सकते हो। उनमें Instinct (स्वाभाविक बुद्धि) है, विवेक नहीं, सत और असत का निर्णय नहीं कर सकता। यह (मनुष्य) हंस वृत्ति रखता है, असत से अपने आपको मोड़ कर सत की तरफ ले जा सकता है। वेदों में यही प्रार्थना आई है कि हे परमात्मा, हमें असत की तरफ से सत की तरफ ले चलो। Lead me from the unreal to real. सारे महापुरुषों ने यह बयान किया है। मगर इसके मुतल्लिक हम बहुत कम जानते हैं। हम यह समझते हैं कि हम खाने के लिए पैदा हुए। अरे भई हम खाने के लिए नहीं पैदा हुए। खाना हमारे लिए बना है,मुआफ करना। यह जबान का रस कहो, हैवानों में भी है -उनमें फिर संयम है, हर एक बात का, इन्सानों में कोई संयम नहीं रहा। हैवान खाली घास फूस खाएगा। जब पेट भर जाए मुंह नहीं करेगा। अगर इस

(इन्सान) को खाने पीने की चटपटी चीजें मिल जाए तो खूब खाता है, ख्वाहें पेट में दर्द ही क्यों न हो जाए।

तो हरेक संयम से यह अपने Perfection (पूर्णता) को पा सकता है। तो पहिली चीज देह का इल्म है। जितने आयुर्वेदिक, एलोपैथिक, होम्योपैथिक और जितने सिस्टम बने हैं, सिर्फ इस शरीर के सुधार के लिए। यह पहिले हैं। इसको कई तरह से अच्छा कर सकते हैं। जिस्म में ताकत होनी चाहिए। दिल, दिमाग, बुद्धि, साफ़ होना चाहिए। इन्सान को चेतन्यता में मदद मिलनी चाहिए। ऐसी खुराक खा सकता है। हाथी क्या खाता है ? सब्जियाँ। फिर ! कितना ताकतवर है। घोड़े क्या खाते हैं ? चने, भूसा। कितनी ताकत है ! अरे ताकत के लिए Vegetarian diet is superior. (उत्तम) मानी गई है। West पश्चिम में, आपको यह पता है ? चौदह Vegetarian (शाकाहारी) कान्फ्रेन्स अब तक हुई है। 15वीं हिन्दोस्तान में सिर्फ हुई है। समझे ! तो सादा खुराक हो, इतना खाओ जितना हजम हो जाए। उससे दिल भी साफ, दिमाग भी सही और आलस्य भी नहीं रहेगा।

महर्षि शिवव्रतलालजी के पास एक दफा एक दिन में कई आदमी आये, कई किसम के सवाल लेकर आये। एक ने कहा, महाराज मुझे नींद आ जाती है जब भजन पर बैठता हूं। कहते हैं, पेट की तरफ ध्यान दो। दूसरा आया कि महाराज मुझे आलस आता है। उठ नहीं सकता। कहते हैं, पेट की तरफ ध्यान दो। तीसरा आया, कहने लगा, मेरा मन बाहर बहुत दौड़ता भागता है। कहते हैं, पेट की तरफ ध्यान दो। जैसी खुराक, जैसा अन्न तैसा मन। तो यह सारी चीजें क्यों आती हैं ? हमें अपने आपका पता नहीं। जबान हमें ख्वार (जलील) किये फिरती है। लिखा है पुराणों में कि अन्न देवता ने शिकायत की, विष्णु भगवान से कि महाराज लोग मुझे बड़ा खाते हैं, मैं बड़ा तंग हूं। कहने लगे, भई देखो जो संयम से ज्यादा खाए, तुम उसको खा जाओ और देख लो, बात ठीक है। बीमारियां क्यों पैदा होती हैं ? हम जरूरत से ज्यादा खाते हैं। बस। जो हज़म हो जाए, फिर बीमारी काहे की ! We live not to eat but eat to live जिन्दगी खाने के लिए नहीं बनी, खाना हमारे लिए बना है। अपने खाने में इतना संयम बरतो जिससे तुम्हें ताकत मिलें, ताकि तुम अन्तर में अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ सको। इसी तरह We live not to clothe but clothe ourselves to live. कपड़ा चाहिए जिसम के लिए, सादा, जिसमें खुली हवा लग सके जिस्म को। हम ज़रक-बरक चीजें खूब पहनते हैं। हमने हजारों रूपया इसी में खर्च कर दिया है। मतलब तो यह था कि जिसम को ढांकना है, सर्दी गर्मी से बचाना है। हम हजारों रुपया इसी में, कपड़ों में खर्च कर देते हैं, Dandies (फैशनेबल) बन जाते हैं। खूब मटक मटक के चलते हैं। आप मतलब समझे, जब तक संयम नहीं बरतते, तब तक काम नहीं बनता। हैवानों (पशुओं) में देखिए, एक बड़ी शर्मिन्दगी की बात है, कि हैवान एक बार उसको उम्मीदवारी हो जाए, गर्भ हो जाए,

वह दूसरे के नजदीक नहीं जाता और इन्सान की क्या गति हो रही है ? हैवान के आगे चारे का ढेर लगा दो। खा लिया और नहीं खाएगा। इन्सान को चटपटी चीजें दो, खूब खाएगा। हैवानों से बदतर हो रहा है। हैवान क्या करते हैं ? बड़ा संयम है उनका Clothing (कपड़ा) क्या है? बड़ा सादा ।

तो मेरे अर्ज करने का मतलब क्या था कि हमारा तरज़े-जिन्दगी (रहने सहने का ढंग) जो है, इसको बकायदा बनाओ। Simple living and high thinking हो। बहुत सारी रुकावटें इसी में बन जाती हैं। अगर हम संयम का जीवन बनाऐं तो लोग भूखे न मरे मुआफ करना। हम संयम से पहिने अगर तो लोग नंगे न फिरे। याने इसका बड़ा भारी Effect पड़ता है। इन चीजों पर हम ध्यान नहीं देते। दूसरा जिस्म कैसे बनता है ? कब्ज हो तो लोग कहते हैं कि खिचड़ी खाओ। मुआफ करना यह नहीं पता कि चावल से कब्ज और होती है। याने इतना भी इल्म हमें नहीं है। अफसोस से कहना पड़ता है। तो पहिली बात थी, ऋषिकुल में पहिला इल्म जो सिखाया जाता था वह आयुर्वेद का इल्म था कि तुम्हारा शरीर Maintain कैसे होता है ।

दूसरा सदाचार। सदाचार किसको कहते हैं ? ऐसा आचार जो सबको सुख देने वाला हो। Righteous living is above all सदाचार का जीवन सबसे ऊंचा दर्जा रखता है। अरे भाई तुम्हारी आत्मा ने प्रभु का रस पाया है या नहीं, लोगों को कुछ पता नहीं मुआफ करना। उस रस का क्या नतीजा, उस रस का क्या असर तुम पर पड़ा, उसका बर्ताव में पता लगेगा, क्या मिला है आपको। तो महापुरुषों ने यह कहा कि दूसरा इल्म जो है वह सदाचार का है। सदाचार में लफ्ज ब्रह्मचर्य आम बरता जाता है। मगर ब्रह्मचर्य के बड़े तंग मायने Narrow value हम लेते हैं। लफ्ज है, ब्रह्म आचर्य। आचार्य किसको कहते हैं ? आचार्य के मायने हैं, Course of conduct रहना कैसा है ! कहते हैं, जीवन चरित्र, आचर्य, आचरण, आपका Conduct कैसा है, कैसा बर्ताव है जो तुमको ब्रह्म तक पहुंचाये, Truth तक पहुंचाये। ब्रह्मचर्य के मायने देखे, असली लफ्जी मायने तो यही है। हम क्या मानते हैं ? हम सिर्फ Animal passions को Control करने का नाम ही ब्रह्मचर्य समझते हैं। समझे ! यह एक पहल है। उसका ब्रह्मचर्य पूर्ण नहीं है। धारण करना बड़ा मुश्किल नजर आ रहा है। उसका कारण क्या है, कि हमने एक तरफ तवज्जो दी, बाकी जहां से आग जलती है, भड़कती है, उसकी तरफ तवज्जो नहीं दी। तो ब्रह्मचर्य के सच्चे मायने तो यह होंगे कि Control of all the organs of sense (इन्द्रिय दमन) देखना, सुनना, सूंघना, चखना और स्पर्श, सारे Organs पर काबू हो। फिर ब्रह्मचर्य कायम रहेगा। हम एक तरफ तो तवज्जो देते हैं, जैसे आग में हाथ डाल दे, कहें यह जलता क्यों है, अरे भई जलेगा।

आप Animal passions को Control करना चाहते हैं, कहां से असर आते हैं ? आँखों से ! तो आंखों से हम क्या करते हैं ? देखते हैं, दूसरों को। संस्कार आते हैं उनसे, देख देख कर असर पड़ता है ना। जिसको देखोगे उसका असर आयेगा। या तो तुम्हारी आत्मा इतनी बलवान हो कि असर न ले, असर दे। दूसरों पर असर क्या पड़ना, हम पर असर पड़ता है। एक आदमी जिस रंग में रंगा है, उसका असर तुम पर पड़ेगा। एक आदमी, मैं अर्ज करूंगा, एक के अन्तर ख्यालात गिरे हुए हैं, उसकी आंखों से वही असर आयेगा । जो ज्यादा रंगा हुआ है छोटे पर रंग आ जाएगा कि नहीं ? सोहबत से रंग चढ़ता है। जैसी सोहबत वैसा रंग। तो देखने से भी असर आता है। क्या देखते हैं ? हम देखते ऐसे हैं, दूसरे संस्कार आते रहते हैं आंखों के रस्ते और हिसाबदानों ने यह हिसाब लगाया है कि अस्सी या तिरासी फीसदी संस्कार केवल आंखों के रस्ते हमारे अन्तर में आते हैं। ठंडे दिल से बिचारो। बाकी हम सुनते रहते हैं। क्या सुनते हैं ? ज़र (धन) और ज़न (स्त्री) की बातें Women and gold. या दौलत का जिकर या विषय विकारों का जिकर ! देखते भी यही हैं, सुनते भी यही हैं। ज़बान से हम क्या करते हैं? ऐसी खुराकें खाते हैं, जो Stimulate करेगी (भड़कायेंगी) जैसा अन्न तैसा मन। तो भगवान कृष्णजी ने गीता में बड़ा निर्णय फर्माया है, कि सात्विक खुराक, ताम्सिक, राजसिक और सात्विक। तो सात्विक खुराक को बरतो। हाथी क्या खाता है ? सब्जियां ! कुत्ते को अगर सब्जियों पर रखो तो खूंखार नहीं बनता। मांस पर रखो, फाड़ कर खाता है। ख्याल पड़ा कि नहीं ! तो यही नही, जिन हाथों से वह चीज़ गुजरती है, उसका भी असर पड़ेगा। जिस जरिये से वह पैसे कमाये गए हैं, उसका भी असर पड़ेगा। तो व्यवहार शुद्ध हो, आचार शुद्ध हो, फिर बाकी असर सब पर पड़ेगा कि नहीं। हमारा न व्यवहार की तरफ तवज्जो है- आये सही पैसा, किसी से आये। किसी का खून निचुड़ा हुआ आ जाये, कुछ भी आ जाये, हक मारा हो कोई फिकर नहीं। आप दस चीजों से रोटी खाते हैं, दूसरे भूखे मर रहे हैं। अगर हम एक से खाना शुरु करें, झगड़ा पाक ! तो यह चीजें, छोटी छोटी बात का असर बड़ा पड़ता है। इसके आगे चल कर बाहरी संस्कार ज्यादातर यही हैं, आंख के, कान के और मुंह के। अगर तीन चीजों के संस्कार जो बाहर से आते हैं, इनको Control कर ले तो ब्रह्मचर्य की रक्षा हो। इसमें दो और इन्द्रियां भी हैं, नासिका और स्पर्श की। स्पर्श से अगर अन्दर में ख्याल मैला है, या दूसरे का मैला है तो असर पड़ेगा। तो खैर तीन जो खास कर इन्द्रियां हैं, इससे बड़ा प्रबल असर पड़ता है। 83 फीसदी आंखों से, 14 फीसदी कानों से और बाकी 3 फीसदी संस्कार, बाकी इन्द्रियों से आते हैं। इनको कन्ट्रोल करो। यह है ब्रह्मचर्य की रक्षा

हमारा ब्रह्मचर्य क्यों नहीं कायम रहता ? उसका कारण यह है कि हम एक चीज को कन्ट्रोल करते हैं, जिस तरफ़ से वह भड़क आती है, तवज्जो नहीं दे रहे। तो ब्रह्मचर्य का मतलब सिर्फ यही नहीं कि एक जी चीज को आप कन्ट्रोल करो Control all organs of senses ऐसा ब्रह्मचर्य हो जिससे तुम ब्रह्म की प्राप्ति कर सको, Truth की प्राप्ति कर सको। हम लोग क्या समझते हैं ? ख्वाब में यह हो गया जी, फलाने वक्त हो गया। क्यों हो गया ? संस्कार आते रहते हैं, देखते रहते हैं, सुनते रहते हैं। ऐसी खुराकें खाते हैं जिससे Stimulation (उत्तेजना) होती है। फिर रक्षा कैसे हो आप बतायें ? तो ब्रह्मचर्य के मायने बड़े ऊंचे हैं ? हम लोगों ने अपनी तंगनज़री (संकीर्ण दृष्टिकोण) से उसके कुछ के कुछ मायने समझ रहे हैं। तो इसलिये महापुरुषों ने इस बात पर जोर दिया है कि सिर्फ एक ही इन्द्री को Control करना काफी नहीं, बल्कि सब Organs (इन्द्रियों) पर Control करो। गुरु नानक साहब ने फर्माया कि आंखों पर हम काबू नहीं रखते, कानों पर काबू नहीं रखते, जबान पर काबू नहीं रखते, फिर आप हकीकत की तरफ कैसे जा सकते हैं ? याने हर एक महापुरुष ने इस बात का जिकर किया है। एक मुसलमान फ़कीर कहता है -

चश्म बन्दो गोश बन्दो लब बे बन्द ।
गर न बीनी सिरें हक बरमन बिखन्द ।।

कहते हैं तीनों इन्द्रियों के घाट जहां से संस्कार आते हैं, अगर इनको तुम बन्द कर लो, बाहर से हटा कर अन्तर्मुख कर लो, कहते हैं अगर तुमको हकीकत का आशकार न हो तो मुझ पर हंसी करना। कभी अन्दर बैठो तो सही ! जैसे धूप से झुलसा हुआ इन्सान एक डयोढ़ी में सो जाता है, होश आने लगती है। ऐसे ही अगर बाहर इन्द्रियों से हट कर यहां ही (माथे पर इशारा करके) बैठना खाली सीख जाओ, ठंडक आने लग जाएगी। अभी प्राप्ती नहीं खाली यहां बैठना सीख जाओ।

मैं नवीं जमात में पढ़ा करता था। मुझे एक देव समाजी भाई मिलने आये थे, पिशवार का वाकिया है। वह आम परमात्मा को नहीं मानते। मैंने उनको कहा कि आखर तुम करते क्या हो? कहने लगे जो यहां (आंखों के पीछे) बैठ कर सुख है, वह कहीं नहीं। अरे भई यहां बैठो, इन्द्रियों के घाट से हटो, इन्द्रियों के घाट से हट कर अन्तर्मुख बैठना, यह तुम मनुष्य जीवन में ही कर सकते हो और किसी में नहीं। बाहर से हटोगे आप, बाहर यह (शरीर) मकान है। उसकी कई खिड़कियां हैं। आपकी तवज्जो बाहर कभी एक खिड़की से, कभी दूसरी से, कभी तीसरी से भटक रहे हो बाहर।

नौ घर देख जो कामण भूली, वस्तु अनूप न पाई।

इस जिसम के नौ दरवाजे हैं। दो आंखों के, दो नासिका के, दो कान के, मुंह, गुदा और इन्द्री। जो सुरत इनमें बाहर भटक रही है, फैलाव में जा रही है, इसके अन्तर एक अनूप वस्तु प्रभु ने रखी है, उसको यह पा नहीं सकता है। यह इन्सान का जामा बड़ा Wonderful house है जिसमें हम रह रहे हैं। एक कीमती चीज को हम क्या करते हैं ? उसको डब्बी दर डब्बी बन्द करके रखते हैं। समझे ! अरे भई कुरान शरीफ़ में जिकर आता है, ''कुन्द कुञ्जन मख़फियन।'' कि मैं एक मख़फ़ी ख़जाना था, जो तुममें रखा है। ऐ इन्सान, तुझमें मैंने एक मख़फ़ी (छुपा) ख़जाना रखा है। उसको बड़ी डब्बियों में बन्द किया है। यह स्थूल (स्थूल देह) डब्बी इसके अन्तर सूक्ष्म (सूक्ष्म देह) डब्बी, इसके अन्तर कारण (कारण देह) डब्बी, तीनों खोलो तो उस ख़जाने को पा लो। वह ख़जाना तुम में है। तो इसीलिये कहा भीख साहब ने -

भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल ।
गिरह खोल नहीं जानते तां ते भये कंगाल ॥

ऐ भीख ! दुनिया में कोई भी भूखा नहीं है, सिर्फ यह डबिया खोल नहीं सकते। जड़ चेतन की यह ग्रन्थी है। हम जिस्म का, स्थूल का रूप बने बैठे हैं, सूक्ष्म का बने बैठे हैं, कारण का बने बैठे हैं। इन तीन से Analyse (अलेहदा) नहीं कर सकते। इसीलिये इस हकीकत को पा नहीं सकते हैं। अब आप देखिए हम जो साधन कर रहे हैं, उनका ताल्लुक किनसे है ? ज्यादातर इन्द्रियों के घाट से, बाहर स्थूल इन्द्रियों से। तो महापुरुष क्या कहते हैं ? कि ऐ इन्सान ! तुझे यह मनुष्य जीवन भागो से मिला है। सब महापुरुष यही कहते हैं -

यह तो समय मिला अति सुन्दर, सीतल हो बच घाम से ॥

यह स्वामीजी महाराज फरमाते हैं -

भई प्राप्त मानुख देह हुरिया। गोबिन्द मिलन की एह तेरी बिरिया ॥
अवर काज तेरे किते न काम । मिल साध संगत भज केवल नाम ॥

मनुष्य जीवन ही में यह काम तुम कर सकते हो। यह दो काम हैं, तुम्हारे काम आने वाले। जिन्होंने इस Mystery of life (जिन्दगी की पहेली) को हल किया है, उनकी संगत और Higher contact, यह दो चीज़े तुम्हारे काम आने वाली हैं। ख्वाहे किसी समाज में रहो। हर एक समाज मुबारिक है। हर एक समाज में महापुरुष आये हैं। तो उस प्रभु का पाना किसी एक समाज या दूसरी या तीसरी समाज का Reserved right न रहा न है, न हो सकता है। क्योंकि सब इन्सान हैं। इन्सान इन्सान सब एक हैं।

मानुष की जात सब एके पहिचानिबो ।

हमने लेबल मुखतलिफ समाजों के लगाये हैं, है तो इन्सान। हैं सब आत्मा देहधारी ! सबकी आत्मा मन के आधीन है। मन आगे इन्द्रियों के आधीन है। इन्द्रियों को भोग खैंचते हैं। अरे भई एक जैसी बीमारी है सबकी। प्रभु ने तो एक जैसे हकूक (अधिकार) सबको दिए हैं बाहरी बनावट के लिहाज से। यह नहीं कि किसी की चार आंखें बना दी हो। सबको दो आंखे, दो कान, बाहरी जिस्म की बनावट, अन्दरूनी भी वैसी ही है। तो प्रभु ने वह मख़फ़ी खज़ाना भी हर एक का एक है। वह प्रभु हमारी आत्मा की आत्मा है। उसका जिक्र ग्रन्थ-पोथियों में गाए जाते हैं। किसके ? प्रभु के, जो तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर वह न हो, यह यजुर्वेद कहता है, कि वह परमात्मा इस सारे संसार को ढांपे हुए है। वह 'मुहीते-कुल (सर्वव्यापक) है, यह कुरान शरीफ कहता है, यही और महापुरुष कहते हैं ।

गुरु नानक साहब मक्का शरीफ़ गये तो वहां पर लेटे हुए थे। पाँव मक्के की तरफ थे। वहां का जो झाड़ूबरदार था, उसने आकर कहा, अरे काफिर क्या करता है, पाँव खुदा के घर की तरफ कर रखे हैं। कहने लगे, भई मुझे तो खुदा का घर हर तरफ नजर आता है। जिस तरफ नहीं, तुम उधर कर दो। यह है सही नजरी। उन्होंने पाई। इस चीज को पाया है। हमारी भी शान्ति तभी है जब हम भी उस गति को पा जाए। अरे भई मुआफ करना, बरात चढ़ी है, दुल्हा जा रहा है, बाजे बज रहे हैं और बच्चे नाच रहे हैं। बच्चे न बनो। फलाने महापुरुष ने प्रभु को पाया। ठीक। फलाने ने पाया, हम उनके गुणानुवाद गाते गाते नाचते रहते हैं। अरे भई तुम्हारा दुल्हा तुम्हारा है। आत्मा का विसाल प्रभु से होना चाहिए। बताओ आप क्या बनना चाहते हैं? वह बच्चे या दुल्हा ! हमारी आत्मा का विसाल (मिलाप) हो, जैसे उन्होंने पाया है। पढ़ कर हमें शौक होता है कि हम भी पाये। हमने पा लिया तो हमारी मनुष्य जीवन पाने की गर्ज पूरी हो गई। समझे ! तो इसके लिए क्या करो ? जिन्होंने पाया है, उनकी सोहबत करो। बड़ी मोटी बात। उनका नाम कुछ रख लो, किसी भेस में हो, भेस तो जिसम के हैं। जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाते हो, आपकी क्या समाज रह जाती है ? ''कहें कबीर एह राम की अंस।'' वह महाचेतन प्रभु है, हमारी आत्मा चेतन स्वरूप है। हम सब आत्मा देहधारी हैं। सबकी आत्मा इन्द्रियों के घाट पर, स्थूल, सूक्ष्म इन्द्रियों से घिरी पड़ी है। अगर इससे आज़ाद हो जाए। अपने आपकी होश आ जाए और अपने जीवन आधार को जान जाये। बात तो यही है और यह काम हम मनुष्य जीवन में ही कर सकते हैं और किसी में नहीं, तो कबीर साहब ने फर्माया है, क्या -

यह दुनिया दिन चार धिहाड़े ।

यह हमेशा रहने का स्थान नहीं। यह तो आपको बड़ा आला मौका मिला है। हमेशा रहने का नहीं। इससे फायदा उठाओ। जितना जल्दी उठा लो, उतना अच्छा है। मैं पहिले अर्ज कर रहा था, पहिला इल्म जिस्म का है दूसरा इल्म है, सदाचार का। तीसरा इल्म है, आत्मा का, अपने आपको जानना और प्रभु को जानना। यह तीन इल्म जो हासिल कर ले, वह Perfection (पूर्णता) को पा जाता है। मगर यह याद रखो कि जिस्म का इल्म न रखते हुए, सदाचार और दोनों चीजें पूर्ण नहीं होती।

मैंने वहां World religions conference (विश्व धर्म सम्मेलन) के दूसरे अधिवेशन में- Vegetarian conference (शाकाहारी सम्मेलन) का मैं प्रेसिडेन्ट था, वहां मैंने यही चीज पेश की कि पहला जिस्म का इल्म है। इसका यह मतलब नहीं कि खाओ पियो नहीं। उतना खाओ, जितनी जरूरत है तुम्हारी। संयम का जीवन बनाओ, सदाचारी जीवन। सदाचार से क्या होगा ? आप कहते हैं, आपको बड़ी ठंडक मिली है। समझे ! आप यह कहते हो, उपदेश देते हो। आपकी रहनी क्या है। किसी को मिले तो नाक से बिच्छू गिरते हैं। जबान से नीम घुटी हुई चली आती है। दिलखराश (दिल दुखाने वाली) बातें निकलती हैं। दूसरे ने थोड़ी बात कही, बर्दाश्त न कर सके। एक दसवीं जमात या एम.ए. में पढ़ता है, एक बच्चा है। वह उतना Develop नहीं हुआ तो आपको उसके लिए नफ़रत क्यों हैं ? उतना Level है, आपका अपना Level और ऊँचा है। आप भी कभी बच्चे थे भई। Every saint has his past, every sinner a future. हर एक महात्मा कभी इन्सान इसी तरह था। Develop (उन्नति) करके एक एम.ए. बन गया, एक डॉक्टर बन गया, एक वकील बन गया। हैं तो इन्सान कि नहीं ? तो मनुष्य जीवन सफल हो गया। मगर वह कितने समय के लिए मिला है ? वैसे है तो हिसाब में, मगर हम लोगों को पता नहीं। इसलिये जितना जल्दी हम मनुष्य जीवन से फायदा उठा लें उतना ही अच्छा है। इसलिये कहा कि भई इसका भरोसा नहीं करो। किसी वक्त भी Cut-off हो जाये।

यहां एक Pilot थे, Air force में। भागते भागते आये मेरे पास। कहने लगे मुझे आर्डर हो गया, छः घन्टे का नोटिस जाने का, फील्ड पर। आप मुझे नाम दे दो। जो पता हो मौत आ जाये तो हम क्या कुछ न करें ! हम मौत को भूल गये। बात तो यह है। मरना सच था, झूठ बन गया। अगर आपको पता हो कि देहली शहर खाली करो तो क्या करोगे ? अरे मौत को, पहिली बात है मरना याद रखो। मरना कोई हव्वा नहीं। जाना है आखिर। कौन नहीं गया। बड़े बड़े ऋषि, मुनि, महात्मा जिनको हम भगवान कहते हैं, वह भी आये, जिस्म लिया और छोड़ गए। तो हमने भी छोड़ना है। तो पहिली बात यह है कि यह जो समय, Golden opportunity मनुष्य जीवन का आपको मिला है, इससे फायदा उठाओ। क्या फ़ायदा ? कैसे उठाओगे ?

यह दुनियाँ दिन चार धिहाड़े रहो अलख लौ लाई ।

इन्द्रियों के घाट से ऊपर अपनी लौ को लगा लो। इन्द्रियों के घाट से ऊपर Rise above करो। Rise above the body-consciousness. पिण्ड से ऊपर आओ, Learn to die so that you may begin to live. इन्द्रियों का घाट छोड़ना सीखो। मौत के समय यह जिस्म (स्थूल शरीर) ही छूटता है। इसके अन्तर सूक्ष्म जिस्म है। इसके अन्तर कारण जिस्म है। अगर इस पिण्ड से ऊपर आओ। अन्तर Astral plan (सूक्ष्म मण्डल) इससे हजारों दर्जा ज्यादा खूबसूरत है। उसके अन्तर कारण मण्डल उससे भी हजारों गुणां और ज्यादा खूबसूरत है। उसके पार चलो। निर्मल चेतन All-consciousness के मण्डल में चले जाओ। वह इस सबसे बेहतर है। इसका जिकर महापुरुषों ने इशारे इशारों में दिया है। तुलसी साहब फ़र्माते हैं कि मैं जब ब्रह्माण्ड में पहुंचा तो मैंने कहा वाह ! वाह ! इस जैसी कोई दुनियां नहीं, सब नीचे की दुनिया है। कहते हैं, जब मैं पारब्रह्मण्ड में पहुंचा तो ब्रह्मण्ड ऐसे मालूम हुआ जैसे एक महेतरों की ट्टी हो। बताओ ! All glory and beauty lies within you. (आपके अन्तर है सब कुछ) आप समझे, मनुष्य जीवन में आपने क्या करना है ? सदाचार ही से लोग आपको जानेंगे। इसलिये कहा, सबके ऊपर आचार है। तुम्हारे Conduct से लोग जानेंगे कि तुमको क्या मिला है। आपके अन्दर भड़क है, गर्मी है, विषय विकारों की। जबान से कितनी देर मीठा बोलेगे। समझे ! बरताव आपका यह है कि दूसरे से तंग-नज़री है, तंग-दिली है, नफ़रत है, धड़ेबन्दी है, दुश्मनी है, बखीली है, फिर ! ऊपर मीठी बातें क्या करेंगी ? जो लफ़्ज बोलते हो, Out of the abundance of heart a man speaks. जो दिल में बसी हालत है, वही असर निकलेगा। तो रहनी, इसलिये कहा है -

रहनी रहे सोही सिख मेरा । सो साहिब मैं तिस का चेरा ॥

अमल सबसे ऊंचा है। An ounce of practice is more than a ton of theory. अमल की आधी छटाँक, हजारों मन बातों से ज्यादा है। हमें एक दूसरे पर असर क्यों नहीं है? हम सिर्फ Superfluous talk देते हैं, हमारी रहनी नहीं है। जैसी अन्तर की हालत होगी उसी से रंगे हुए आयेंगे ना। जो हवा आग के साथ लग कर आयेगी, वह गर्म होकर आयेगी। जो हवा बर्फ के साथ लग कर आयेगी, ठंडी होकर आयेगी। जिस हृदय में प्रभु का प्यार है, विश्व का प्रेम है,सबके लिए शुभ भावना है,Peace be unto all the world over.

नानक नाम चढ़दी कला। तेरे भाणें सरबत का भला ॥

अरे भई जो लफ्ज सादा ही कहेगा, उसका असर कुछ और है। जिसके अन्दर विषय विकार, दुश्मनी, बखेली, निन्दा चुगली, धड़ेबन्दी, यह वह बस रहे हैं, अरे भई कितनी मीठी

बातें करे, असर तो वही है। तुम्हारे साथ कोई भाई बात करता हो, उसके दिल में तुम्हारे लिए शुभ भावना न हो, ऊपर से बड़ी मीठी जबान हो, असर कैसे देखोगे तुम उसका। दिल-दिल का साक्षी होता है। अकबर बादशाह थे। एक दफा बीरबल ने कहा कि, भई दूसरे के दिल पर इन्सान का अपने दिल का असर पड़ता है। समझे ! तो बादशाह ने कहा कोई सबूत इस बात का? कहने लगे आज ही देख लो। बाहर गए। बादशाह नंगे सिर जा रहे थे। दूर से एक आदमी आ रहा था। कहने लगे बीरबल, कि इसके मुतल्लिक अपने दिल में कुछ धारण करिये, ख्याल। जब वह पास आये तो उससे पूछना कि आपको देखकर उसके दिल में क्या भावना उठी है। जब वह आदमी आया बादशाह ने दिल में ख्याल किया कि इसको गोली मार दूं मैं। ख्याल यह उठा। याद रखो Wave of thought (ख्याल की धारा) बड़ी जबर्दस्त होती है। अगर आपकी Thought wave पवित्र हो, प्रेम भरी हो, दूसरा कोई नुकसान नहीं दे सकता। तो वह जब नजदीक आया तो पूछा भई तुझे मुआफ़ी है, मेरी शकल देख कर तुम्हें क्या भाव उठे। कहने लगा मेरे दिल में ख्याल आया कि यह गोल गोल सिर है, मुक्का मार के तोड़ दूं। ख्याल का असर है। गुरु नानक साहब थे। धूप आ गई, चेहरे पर। सांप फनियार साया देता है। तो जिसके दिल से Waves प्रेम की,प्यार की रौयें निकलती हैं, उससे सांप भी उसकी रक्षा करता है। यहीं का वाकिया है, यहां Shed था पहिले। सत्संग करते करते एक सांप का बच्चा आ गया। ऐसे खड़ा हो गया। संगत कहने लगी कि सांप आ गया। मैंने कहा कोई फिकर न करो। घन्टा, सवा घन्टा सत्संग होता रहा। सांप खड़ा रहा। सत्संग खत्म हुआ तो वह चला गया। कहने लगे कि इसको मार दे। मैंने कहा, अरे भाई उसने तुमको कुछ नहीं कहा, तुम उसको क्यों कुछ कहते हो। ख्याल का असर होता है. अब आप समझे कि सदाचार कितना जरूरी है। सदाचार से तुम परखे जाते हो। Righteous living is above all. सबसे ऊंचा दर्जा रखता है, Righteous living. हमने प्रभु की फौज में दाखल होना है। Good thoughts and righteous living बनाओ। जिसकी, ब्रह्मचर्य की, मैंने तारीफ दी है, उसका जीवन बनाओ। असर पड़ेगा। यह आता है कि परमात्मा को कौन देखता है ? उसका बच्चा। कोई जो अनुभवी पुरुष कोई देखता है और कौन देखते हैं? जिसको उसका बच्चा (अनुभवी पुरुष) दिखलाये।

मैं आपको आज एक बात कहूं। लोग आपकी कीमत रसाई की आपके गुरु की या सत्संग की परख किससे करते हैं ? तुम्हारे जीवन से। सच्ची बात। तुम्हारा जीवन क्या है ? अगर तुम्हारा जीवन संयम का बन गया है, सबकी शुभ भावना है, किसी के लिए बुरा चितवन नहीं, कोई बुरा भी कहता है, उसको प्यार से समझाते हो,यह समझे क्योंकि यह विचार अभी Develop नहीं हुआ। अगर पहिली जमात या दूसरी जमात के बच्चे से यह उम्मीद करो कि

तुम्हरी एम.ए. पास जैसी बातें करे तो कर सकेगा ? Allowance कुछ दो, Accomodaing spirit बनाओ। इससे अन्दाजा है कि भई इसको कुछ मिला है। आपको क्या मिला उसको तो पता नहीं, मगर बाहरी जो शक्ल बनी है, बर्ताव की, वह उससे अन्दाजा लगायेंगे कि इसको भई कुछ मिला है। इसका भई गुरु भी अच्छा होगा। यह जहां जाता है, वह भी अच्छा होगा। अगर आपका जीवन वैसा ही है, रोज लड़ते मरते ही, आपने जो उपदेश ले लिया, फलाने सत्संग में जाते हो, फलाने महात्मा के पास जाते हो, अरे भई महात्मा भी ऐसे ही होंगे। क्यों साहब लोग तो यही अन्दाजा लगाएंगे ना। तो इसलिये मैं अर्ज कर रहा था कि लोगों ने अन्दाजा आपके सदाचार से लगाना है, तुम क्या बने हो भई। तो इन्सान बनना है इन्सान ! इन्सान किसको कहते हैं ? जिसके अन्दर प्रेम और मुहब्बत हो, जो प्रेम का पुतला हो। जहां प्रेम होगा, आप बताओ, किसी को दुःख देना चाहोगे ? किसी का हक मारोगे ? किसी की इज्जत उतारोगे ? बच्चा बाज वक्त दाढ़ी पर भी हाथ डालता है। तो क्या ? तुमको प्रेम है, इसलिए तुमको बुरा नहीं लगता। प्रेम की कमी है ना। इन्सान वही है जिसके अन्तर प्रेम हो। Love and all things shall be added unto you. धर्म किसको कहते हैं ? थोड़े से लफ्जों में, दूसरे से ऐसा सलूक करो जैसा तुम चाहते हो लोग तुम्हारे साथ करें। यह बातें थी थोड़ी जो मैंने पेश की कि मनुष्य जीवन पा कर यह तीन चीजें हैं। तीन इल्म हैं, जो इसमें इन्सान पा सकता है, मनुष्य जीवन में और में नहीं। जिसम को पा लो, इसलिये कि प्रभु की रसाई हो, इसलिये कि तुम किसी के काम आ सकते हो। अपने लिए तो सारा जहान ही जीता है। अरे भई दूसरों के लिए जियो। सदाचार से आपका अन्दाजा लगेगा कि तुम क्या बने हो। तुम्हारे अन्दर झूठ है, चोरी है, कपट है, ऊपर से कुछ अन्तर में कुछ, ऊपर से ज्ञान-ध्यान छांटते हो, अन्तर में पाप भरा पड़ा है। वक्त के बगुले की तरह मछली जब आई हजम कर ली, ऊपर से महात्मा बने रहे। अरे भई दुनियां को तो तुम धोखा दे सकते हो, उस प्रभु को कैसे धोखा दे सकते हो ? वह तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। ग्रन्थों पोथियों किसी का भी मुतलिया (अध्ययन) करो, किसी महापुरुष की वाणी पढ़ो, यही कहते हैं। परमात्मा कहां है ? कहते हैं, तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। ''अल्लाह शाहरग से नजदीक है।'' आप थोड़ा Digest form में (सार तत्व जो है धर्मग्रन्थों का) उसको समझो। इसीलिए उसने कहा Ethical life is stepping stone to spirituality. सदाचारी और नेक पाक जीवन प्रभु के पाने का पहिला जीना है। Blessed are the pure in heart for they shall see God. जिनके हृदय पवित्र हैं वह मुबारक हैं। केवल ऐसे हृदय ही प्रभु को पा सकेंगे, किसी समाज में हों। हर एक समाज में महापुरुष आये हैं, अरे भई यहां यह Common ground हमने रखी है, हमारे

हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) के हुक्म के मुताबिक, जहां पर सब समाजों के भाई इकट्ठे होते हैं। अपनी अपनी समाजों में रहो, अपने अपने बोले रखो, अरे भई यह काम करना है। यह कर लो, जो हम भूल गये हैं। यम और नियम के साधन क्यों बतलाये गए ? इसीलिए? बुद्ध का Eightfold path क्यों रखा गया ? इसीलिए! Sermon of the mount क्राईस्ट ने दिया। क्यों दिया ? यही दिया। आखर इशारा दिया, If thine eye be single thy whole body shall be full of light अगर तुम्हारी एक आंख बन जाए,शिवनेत्र खुल जाए, तुम्हारे अन्तर ज्योति का विकास हो जाए। तो हर एक इतवार को यहां किसी न किसी की हर एक महापुरुष की बाणी ली जाती है। पिछली दफा स्वामीजी महाराज की थी, उससे पहिले गुरुबाणी थी। इसी तरह और और महापुरुषों की वाणियों से उदाहरण दिये जाते हैं, इस बात को बताने के लिए कि तालीम एक है,सब समाजों के सामने, कमी है तो करनी की है, रहनी की है। बस। तो आज छोटा सा एक शब्द आ रहा है, कबीर साहब का, गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं -

हंसन का एक देश है, तहां जाय ना कोई ।

लफ्ज बड़े साफ हैं, कि हंसों का एक ऐसा देश है जहां हंस बसते हैं । वहां कोई नहीं जाता। हंस किसको कहते हैं ? महापुरुषों की बाणी में यह Beauty है, खूबसूरती है, कि थोड़े लफ्जों में बड़ी पुरमग़ज (पते की) बात कहते हैं। महापुरुष जब भी आये हैं, याद रखो इन्सान के जामे में आकाश-तत्व प्रबल है और योनियों में इतना नहीं। आकाश-तत्व प्रबल होने के सबब से इसके अन्तर विवेक है। विवेक किसको कहते हैं ? Discrimination को, सत और असत का निर्णय कर सकता है। यह इन्सान के अन्तर खास आकाश तत्व प्रबल होने के सबब से है। तो इसलिए महापुरूषों ने जीव को, आत्मा को हंस कहा है। स्वामीजी महाराज ने बड़े साफ लफ्जों में फर्माया -

हंसनी छानो दूध और पानी ।

ऐ आत्मा ! तू हंसनी है। तेरे में विवेक बुद्धि है। तू सत और असत का निर्णय कर सकती है, सत को ग्रहण करे और असत को छोड़े। दूध को पी लो। उस (हंस) की चोंच में यह तासीर है, है या नहीं हमारा इससे झगड़ा नहीं, कि दूध और पानी मिला हो, दूध अलेहदा हो जाता है, पानी अलेहदा हो जाता है। वेद भगवान में आता है या नहीं कि हे परमात्मा ! हमें असत से सत की तरफ ले चलो। इन्सान के अन्तर अगर एक विवेक नहीं, अगर वह गुरु का पुजारी है तो भी दुखदाई है। क्यों ? मेरा गुरु अच्छा, दूसरे का बुरा। एक महात्मा का पुजारी दूसरे को गालियां निकालता है। एक महात्मा का पुजारी दूसरे के पास जाने से नफरत करता है। इसका

नाम है गुरु-पशु। कबीर साहब ने कहा, शख्सियतों (व्यक्तियों) से खास-खास से इन्सान बन्धा हुआ, नर-पशु। फलाने आदमी ने कहा, हो किसने कहा, सच बोलो भई। कुरानशरीफ़ कहता है। नहीं गलत कहता है। कुरानशरीफ़ कभी यह नहीं कहता, हमारा वेद भगवान कहता है। समझे ! त्रिया-पशु, भई इस बात की तारीफ करने की जरूरत नहीं, हर कोई समझता है कि हम कितने यशु हैं Women के और Gold के। ज़र (सोना) और ज़न (कामिनी) के।

कन्चन और कामिनी दुर्गम घाटी दो ।

देखते हैं, इन्हीं चीजों को, ज़र और ज़न को। सुनते हैं, किसका जिकर ? ज़र और ज़न का। बातें करते हैं, किसकी ? ज़र और ज़न की। जहाँ बैठो, चुपचाप सुनते रहो। इन दोनों में से एक न एक बात होगी। कहीं आपको सत और असत के निर्णय की बात सुनाई देगी, नहीं तो, फलाना करोड़पति है, लखपति है। उसने कौन सा रूपया कमाया, उसने फलाने का हक मारा, यह किया, वह किया। रुपया हमें भी होना चाहिये, हमारा एक छोटा मकान है। उसका महल है। यही हला-हला मच रही है। फलानी स्त्री ऐसी है, फलाना ऐसा है। बस यही दो चीजों की बातें, कबीर साहब कहते हैं ''दुर्गम घाटी दो।'' कोई ऐसा पुरुष नहीं मिला जिसके पास बैठे, कि जो इन दो घाटियों को तै कर गया हो। तो कहते हैं, ऐ हन्सनी, तू हंस है। हंस, आत्मा सत और असत का निर्णय कर। तेरा देश कोई और ऐसा है, जहां तुम जाना नहीं चाहते, तुम कौवे की वृत्ति वाले बन रहे हो। इन्द्रियों के भोगो-रसों में लम्पट हो रहे हो। तुम सत और असत का निर्णय नहीं करते जहाँ, गुरु-पशु बन गये। आपको पता है, एक दूसरे को कत्ल कर दिया जाता है। एक महात्मा के पास जाने वाला दूसरे महात्मा के पास चला जाये, आपस में कशमकशें (झगड़ें) हो जाती हैं। मत जाओ वहां, वहां नहीं देखो, फलाना नहीं करो। अरे भई यह गुरु-पशु होना है, विवेक नहीं है।

गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु, वेद पशु संसार ।

ग्रन्थों-पोथियों के भी हम पशु हैं। अरे भई सब ग्रन्थपोथियां कहती हैं, तू हंस है। तुझमें विवेक है, विवेक से काम ले। तो कबीर साहब कहते हैं, अगर विवेक नहीं तो सारे ही बन्धन के कारण, दुःख के कारण हैं। सब ग्रन्थों पोथियों में आखर दिया क्या है ? अनुभवी पुरुषों ने जाती (व्यक्तिगत) अनुभव, Findings उस Way (प्रभु के पथ) में जाते हुए। प्रभु को पाने के लिए जो कुछ उनको मिला। कौन सी चीजें मददगार बनी, कौन रुकावटे आई, उनका एक Fine record है। हम कौवे की वृत्ति से पढ़ते हैं। हम यह देखते हैं कहां पर बीठ पड़ी है। हंसवृत्ति नहीं, इसलिये हम जो Commentators (टीकाकार) होते हैं, वह Commentaries अपनी बुद्धि के Level (स्तर) से Fault finding (नुक्स निकालने) के लिए होती है।

उनमें तात पराई रहती है। अच्छी चीजों की तरफ तो नजर जाती नहीं, हमेशा गन्दगी की तरफ जाती है। तो कहते हैं, ऐ आत्मा ! तू हंस है। तेरा देश, हंसों का देश, कहां है ? All - conscious है ना, आत्मा चेतन स्वरूप हैं ना। इसका वह असल देश है जो All - consciousness है।

तेरा धाम अधर में प्यारी तू धर संग रहत बन्धानी ।

ऐ आत्मा, तेरा असल देश वह है जहां यह Matter नहीं है, न स्थूल, न सूक्ष्म, न कारण। कहां के रहने वाली, कहां मिट्टी पानी में फंस रही है। तू हंस है। इसलिये तुझे हंस वृत्ति से काम लेना चाहिए। जहां विवेक नहीं, वहां बन्धन हैं। बस। बड़ी मोटी बात। यह किनको उपदेश दे रहे हैं ? हंसों को ! किनको ? जो सत और असत का निर्णय करना चाहते हैं, इस मनुष्य जीवन से पूर्ण फायदा उठाना चाहते हैं और यह काम हम केवल मनुष्य जीवन ही में कर सकते हैं। बड़ी मोटी बात। तो कहते हैं, ऐ हंस ! तेरा असल देश कोई और है। तू वहां जाना नहीं चाहता है। इसका और महापुरुषों ने भी जिकर किया है।

बेग़मपुरा शहर को नाओं ।

गुरुबाणी में आता है, वह एक ऐसा शहर है जहां ग़म नहीं, खिराज (कर) नहीं, कोई टेक्स नहीं,कोई बन्धन नहीं, जहां न दुःख है न खिराज है, न यह है, न वह है। वह आत्मा का असली देश है। हम उस देश के वासी हैं। कहां के वासी, कहां मिट्टी पानी में फंस रहे हैं। यहीं और और महापुरुषों ने कहा -

अर्शेस्त नशेमने तो शरमत बादा । कानी ओ मुकीमी ख़ते ख़ाक शबी ॥

ऐ आत्मा, तेरे रहने की जगह है, जो अर्श (आकाश) है, कहां के रहने वाली, कहां मिट्टी पानी में, इन्द्रियों के घाटों पर मिट्टी पानी है और क्या, फंस रही है। सारे महापुरुष यही कहते हैं -

हैफ़ दर बन्दे जिस्म दर मानी। निशनवी आं सौते पाके रहमानी ॥

अफ़सोस तू इस जिस्म के बन्धन में बन्ध रहा है, उस मालिक की पाक आवाज तुझे आ रही है, उसको तू सुनता नहीं। ग्रन्थों पोथियों में याद रखो परमात्मा का जिकर है, महापुरुषों की बाणियां हैं जिन्होंने देखा है।

सुन सन्तन की साची साखी। सो बोले जो पेखें आखी ॥

उन्होंने देखे हैं, वाकेयात बयान किये हैं। अब इनके पढ़ने वालों के और देखने वालों के बयान में फर्क होगा कि नहीं ? कबीर साहब थे। एक पण्डित उनको मिले, सर्वाजीत पण्डित। उससे बातचीत हुई। कहने लगे -

मेरा तेरा मनुवा कैसा इक होई रे ।
मैं कहता हूं आँखन देखी, तू कहता कागत की लेखी ।।

मैं देख कर बयान करता हूं, तू काग़जों का पढ़ा-पढ़ाया बयान करता है। देखा बयान, क्राईस्ट ने कहा कि आपको मैं जो कहता हूं, मैंने देख कर बयान किया है और लोग यकीन नहीं करते। है भी बात सच्ची, हजार उल्लू हो बैठ कर फैसला कर दें कि सूरज तीन कालों में नहीं हुआ, फिर ! अब कोई महात्मा ऐसा मिले जो उस रौशनी को दिखा दे, आंख बना दे,तब तो आये ना यकीन। दुनिया सारी ही ज्यादातर या Feelings में है, या Emotions में है, या Inferences निकालती है। देखते नहीं। Seeing is above all. देखने वाले महात्मा से सुनोगे,बातें बड़ी साफ़, बड़ी Clear-cut and to the point होंगी। देख कर उसमें शक की गुन्जायश नहीं कहते हैं । ऐ हंस,तू हंस है। तेरा देश कोई और है। तू वहां जाना नहीं चाहता, कहां मिट्टी पानी में फंस रहा है। आगे इसी मजमून को खोलते हैं, गौर से सुनिये -

हंसन का इक देश है, तहां जाय न कोई ।

यह सब हंस बैठे हैं। समझे ! आत्मा हंस है ना। इसमें विवेक है। मगर इन्द्रियों के भोगो-रसों में लम्पट हो रहा है। इसका देश कोई और है। यहां यह देश नहीं, इसलिये महापुरुषों ने कहा है-

धाम अपने चलो भाई पराये देश क्यों रहना ।
काम अपना करो जाई पराये काज क्यों फंसना ।।

यह नहीं कहा, न करो। फंसो नहीं ।

ब्रह्मज्ञानी को नाही धन्धा ।

यह नहीं कि काम नहीं करता। काम करता है, मगर उसमें Attachment नहीं आती। वह देखता है, यह चन्द रोजा है। Make the best use of it काम वह भी करता है। खाता भी है वह, पहनता भी है, चलता फिरता है, मगर उसमें विवेक बुद्धि है। उसको बन्धन नहीं है। वह अनुभवी पुरुष है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई सब हंस बैठे हो, तुम्हारा देश तो कोई और है, कहां फंसे बैठे हो ! कहते हैं, उस फंसने का कारण क्या है ? आगे बताऐंगे। गौर से सुनिये -

काग वरण छूटे नहीं कस हंसा होई ।

कि कौवे की वृत्ति बन गई है, इसलिए वह हंस वृत्ति कैसे हो ? कौवे की वृत्ति क्या है ? हमेशा विष्टा पर गिरता है। हमारी आत्मा मन के आधीन है, मन आगे इन्द्रियों के आधीन है। इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं। देखते हैं, इन्हीं दो चीजों का जिकर सुनने हैं, इन्हीं दो चीजों का

जिकर करते हैं। यही संस्कार बैठते गये। हम इसी Level (स्तर) से देख सकते हैं। काली ऐनक लग गई, काला ही सारा जहान नजर आता है। हम इस Level से अन्दाजा लगाते हैं। समझे ! आंख वैसी बनी है, तो कहते हैं कि भई काग वृत्ति बन गई, इन्द्रियों के भोगो-रसों के संस्कार, बाहर आंखों के रस्ते इन्द्रियों के घाट से यही आते हैं। वह एक Superficial (बाहिरमुखी) जीवन बन गया। कभी Dip in (अन्तर मुंह) नहीं किया, Tap-inside (अन्तर जाना) नहीं हुआ। अपने आपकी तरफ कभी नजर नहीं गई कि मैं कौन हूं। मुआफ करना हमसे छोटा बच्चा, तीन चार साल का, ज्यादा सयाना है इस लिहाज से। पूछो तुम कहां हो, तुम कौन हो, क्या करता है ? मुंह फाड़ता है, आंखें खोलता है। उसको पता है मैं यहां हूं। जैसे जैसे इन्सान बड़ा होता है, पूछो तुम कौन हो कि मैं रामसिंह, मैं रामचन्द, मैं मिस्टर स्मिथ, मैं मिस्टर फलाना हूं। यह भी भूल जाते हैं । जो छोटे बच्चे को Consciousness बाकी है, वह भी Identify हो गई शरीर से। बाहरमुखी होने के कारण बाहरमुखी हो जाता है। कब होश आती है ? जब अन्त समय आता है क्या होता है ? इन्द्रियां उलटती है। जिस्म छूटता है। उस वक्त होश आई तो क्या आई ! अगर होश अन्तर्मुख होने से आ जाए, मौत का खौफ न रहे।

लगाओ सुरत अलख स्थान पर जाँ को रटत महेशा ।

शिव भगवान भी जहां ताड़ी लगाए बैठे हैं। शिव-नेत्र कहां बनाते हैं, आपको पता है ? माथे पर, इन्द्रियों के घाट से ऊपर। इन्द्रियां यहां (माथे से नीचे) रह जाती हैं ना ! यहां (माथे पर) शिव नेत्र हैं। वह आंख सब में है, उसका नाम है दिव्य-चक्षु, उसका नाम है शिव-नेत्र, उसका नाम है Single eye जिसके बारे में कहा, If thine eye be single thy whole body shall be full of light यदि तेरी दो की एक आंख बन जाए,तेरा सारा शरीर नूर (दिव्य ज्योति से) भर जाएगा। गुरुबाणी में आया है -

दस इन्द्रे कर राखे बास । तां के आत्मे होय परगास ॥

Inversion का सवाल है, बाहर से हटने का सवाल है।

साईं दा की पावणा, इधरों पटणा ते उधर लावणा ।

बस ! सुरत है, जिस तरफ लगा लो। अगर मन-इन्द्रियों के भोगो रसों में लम्पट हो रहे हो तो अन्तर दूर हो गए। Make the best use. इनसे (इन्द्रियों से) फायदा उठाओ, मगर जो काम करना है, वह करो। बाहर देखते हो, अन्तर भी देखना सीखो। बाहर सुनते हो, अन्तर का राग भी सुनो Voice of God को सुनो। तब तो हो गया। बाहर की लज्जतें (रस) ले रहे हो, इन्द्रियों के भोगो-रसों की, अन्तर के महारस को भी लो। यह इन्सानी जामे (चोले) में

तुम कर सकते हो और किसी जूनी में नहीं, यह याद रखो। यह तालीम किन लोगों को है ? हंसों को। हंस कौन हैं। सब आत्मा देहधारी। यह काग वृत्ति जो हमारी बन रही है, इसलिये असलियत से दूरी हो रही है। नहीं तो परमात्मा का पाना कोई मुश्किल नहीं। वह तो आगे ही मौजूद हैं। आपने पैदा नहीं करना, आपने उसको बनाना नहीं। सिर्फ बाहर से हट कर अन्तर्मुख होना है। How to invert का सवाल रहा कि अन्तर्मुख कैसे हो ? बात तो यह है। जो अन्तर्मुख हुए उनकी सोहबत करो।

मिल साध संगत भज केवल नाम ।

जो अन्तर्मुख लोग जाने वाले हैं, उनकी सोहबत में बैठो। तुमको कुछ पून्जी मिलेगी। उपदेश देने वाले बहुत महात्मा आपको मिलेंगे। वह बाहरमुखी क्रियाऐं तो सिखाऐंगे। आपको सिखाऐंगे कि कैसे हृष्ट-पुष्ट बन सकते हो। कैसे Will force (मानसिक शक्ति) Strong हो सकती है। अपराविद्या के साधन, यह करो, वह करो, वह जमीन की तैयारी के लिए तो है मगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने की पून्जी नहीं दे सकते। कहीं कहीं कोई कोई महात्मा है जो दे सकता है। जो दे सकता है, उसी के पास बैठ कर इन्सान कदम उठा सकता है।

सन्तन मोको पून्जी सौंपी ।

कुछ थोड़ा Experience भी मिल जाये, उसको दिनों दिन बढ़ा सकते हो। एक आदमी आये, आपको लेक्चर दे जाए बड़ा आला Business के असूलों पर, मगर जिनको वह लेक्चर देता है उन बिचारों के पास पैसा ही कोई नहीं, आपका लेक्चर क्या करेगा ! तो अनुभवी पुरुष आपको थोड़ी पून्जी देता है, Way-up करता है। उसको दिनों-दिन बढ़ाओ, बढ़ जाएगा। हमारे हजूर फर्माया करते थे, नाम का देना क्या है। हमें उपदेश देने वाले बड़े महात्मा मिलते हैं। वह तो एक चर्खा कातने वाली लड़की भी बतला सकती है। सवाल तो Way-up का (पिण्ड से ऊपर लाने) का है। थोड़ी भी पून्जी मिले तो आगे चले। जिन्होंने पाया है, जो Invert (अन्तर्मुख) हुए हैं, उनकी सोहबत में Way-up होगा। थोड़ा होगा तो ज्यादा की भी उम्मीद हो सकती है।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि तुम कागवृत्ति छोड़ो। इन्द्रियों के भोगो-रसों से हटो, विषय विकारों से। थोड़ा संयम में आओ। चीज तुम में है। चीज अन्तर में हो-

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि विधि आवे हाथ ।
कहे कबीर तब पाईये जो भेदी लीजे साथ ॥

चीज़ तो हो इन्द्रियों के घाट से ऊपर, तुम इन्द्रियों के घाट के साधनों में या Attachments में या विषय विकारों में लम्पट होने से उसको पा नहीं सकोगे, हज़ार विचार कर लो

तो भी नहीं होगा, क्योंकि उपनिषद कहते हैं, **''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होगा।''**

हम अब बुद्धि से, विचार से, काम ले रहे हैं यह समझने के लिए कि बात क्या है। समझ भी आ गई मगर अभी मिला तो नहीं। कुछ जिसने पाया है, अगर थोड़ा सा Way-up कर के, Experience दे दे, फिर उसे और आगे बढ़ाओ और इसके लिए आप देखेंगे कि कितनी सदाचार की जरूरत है, कितनी जीवन की पवित्रता की जरूरत है? ब्रह्मचर्य के असल मायने यही थे। तंग-नजरी से कुछ का कुछ बन रहा है। ऐसा आचरण जो ब्रह्म तक, Truth तक तुमको पहुंचाए। वह एक ही, Animal passion को Control करना नहीं। वह भी एक बड़ी भारी बरकत है, मैं आपकी अर्ज करूंगा। मकान की बुनियाद है, जिसकी मकान की बुनियाद मजबूत है, उस पर जितनी मर्ज़ी छत चढ़ा लो। जिसका ब्रह्मचर्य कम से कम Purity of thought नहीं, Word & deed वह इस रास्ते कामयाब नहीं हो सकता। बात तो यह है। इसीलिए जो भाई या बहिनें यहां आते हैं, उनको यह ताकीद की जाती है कि अपने जीवन की पड़ताल करो। डायरी रखो। मैंने As a student रखी अपने आप। अगर खाली लाईफ में पवित्रता आ जाये,आपमें दिव्यदृष्टि हो जाती है। समझे। दिव्य-दृष्टि हो जाए। जिस पानी में कोई Wave (लहर) न उठे, Reflection होगा या नहीं ? और लोग अन्दाजा भी आपका इसी से लगा सकते हैं ? कि तुम्हें क्या मिला है। तुम्हीं समाजों को बदनाम करने वाले हो, तुम्हीं नेकनाम कर सकते हो, अगर विवेक रख लो। सच्ची बात तो यह है। समाजें सब अच्छी हैं। तालीम सब महापुरुषों ने वही दी है। अपनी अपनी जबानदानी रही, तरज़े-बयान अपना रहा, नफ्से मजमून वही रहा है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि काग वृत्ति छोड़ो।

काग वरण छूटे नहीं कस हंसा होई ।

जो एक दिन काम करो, दो दिन करो, दस दिन करो, दस साल करो, Habit (आदत) बन जाती है। Haibt (आदत) Nature (स्वभाव) में दाखिल हो जाती है। अब इस Nature को बदलना है। यही मुश्किल है। इसलिये Time factor जरूरी है। अगर कोई महापुरुष ऐसा मिल जाय, जो तुमको इन्द्रियों के घाट से Way-up करने की थोड़ी पून्जी दे दे तो -

गुरुमुख आवे जाये निसंक ।

फिर रोज रोज चलो। जब वह रस आयेगा यह रस अपने आप दिल से हट जायेंगे। दरख्त को काटना है, शाखायें पहिले काटी जाती है ताकि आसानी से तना कट जाये। बाहरी जीवन की पड़ताल इसलिए जरूरी है कि थोड़ा संयम का जीवन बने, आसानी से अगला रस्ता तय हो सके और बात कुछ नहीं। तो Self-analysis के बगैर काम नहीं बनेगा। कैसे कर सकोगे,

यह एक Practical (करनी का) मजमून है। कोई अनुभवी पुरुष जब मिलेगा आपको इसका थोड़ा Experience देगा। उस्ताद मेहर (दया) करे, पढ़ाये। Student मेहर (अपने पर दया) करे, सबक याद कर आये। मेहर और करनी साथ साथ चलती है। परिन्दा (पक्षी) उड़ता है, दोनो परों से उड़ता है। मेहर न हो, Experience न मिला तो क्या करेंगे ? सारी उमर ख्वाहे नेक कर्म भी करो, तो भी, भगवान कृष्णजी क्या फर्माते हैं, नेक और बद (बुरे) कर्म, दोनों ही जीव को बांधने के लिए एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी। जब तक इल्म के साथ अमल नहीं है, Practical Self-analysis नहीं (जीते जी पिण्ड से ऊपर आना) नहीं किया, हकीकत तुम में है, मगर तुम उससे बेखबर (अनभिज्ञ) रहते हो। जब कोई इस राज़ (भेद) का वाकिफ मिलेगा, आपको First-hand थोड़ा सा Experience देगा, How to do it थोड़ा उभार देगा, फिर चलो।

करनी मेहर दोऊ संग चालें ।

जो भाई इस ख्याल में बैठे हैं कि चलो नाम मिल गया, बेड़ा पार हो गया, भई गलत है। बेड़ा अभी पार नहीं हुआ। बेड़ा पार होने के लिए तुम में बीज डाला गया है। जितना इसी जन्म में पढ़ लो, जो जीते जी अनपढ़ है, मर कर भी अनपढ़ रहेगा। जो जीतेजी पण्डित है, मर कर भी पण्डित रहेगा। मनुष्य जीवन बड़े भागो से मिला है। इसमें तुम जितना करोगे आगे काम आयेगा, अगर तुम्हारी Attachment दुनिया से बनी रही, बीज का सिर्फ इतना ही फ़ायदा है कि आप फिर मनुष्य जीवन से नीचे नहीं जा सकते। बस। क्योंकि मनुष्य जीवन है, जिसमें यह बीज उग सकता है। बस। हां Better circumstances हो जायेंगे। अरे भई जन्म मरन में क्या पड़ा है। क्यों न अभी फैसला करें। महापुरुष तो यही कहते हैं Time and tide wait for no man. वक्त और दरिया की लहर किसी का इन्तजार नहीं करते हैं। अकलमन्द इन्सान कौन है फिर ? अब आप कहिए। हम जिसको भी कहते हैं, क्यों भई भजन किया। जी वक्त नहीं ! अरे भई मरना तुमने है कि मैंने तुम्हारी जगह मरना है ? सच्ची बात ! बड़े सदाचारी से सदाचारी इन्सान भी हो, अव्वल तो दुनिया में भी जब लोगों की गर्जे नहीं पूरी होंगी तो तुमको छोड़ जाऐंगे।

सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहु दिस घेरे ।
बिपत परी सब ही संग छांडियो, कोई न आवत नेरे ।

कोई गरीबी में, कोई नादारी में, कोई मुश्किल में, कोई बीमारी में छोड़ जाऐगे। बड़े सदाचारी भी होंगे हद अन्त समय तक। तुम घिड़कते मर रहे हो। अगर तुम पहिले ही मरना सीख जाओ, इन्द्रियों के घाट को छोड़ना सीख जाओ -

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।
मरने ही ते पाईये पूर्ण परमानन्द ॥

मौत का क्या खौफ है ? इस काम में कौन मददगार हो सकते हैं ? जो ऊपर जाने वाले हैं। तुमको ले जा सकते हैं। थोड़ा Way-up पून्जी दे सकते हैं। रोज़-रोज़ कमाई करो, उनकी हिदायत के मुताबिक,तुम्हारी कल्याण हैं। जीतेजी भी सुखी,मर कर भी। दोनों हाथ लड्डू हैं। कहते हैं, काग वृत्ति छोड़ो, हंस कैसे बनोगे। कबीर साहब ने और कई तरीकों से समझाया है।

दिल दरिया की माछरी गंगा बहि आई।
अनिक जतन से धोवई तौऊ बास न जाई ॥

यह बात न करो, वहां बैठे, वहां बैठे। हां इसमें एकान्त हो। धर्मस्थान इसलिए बनाये गए कि लोग घरों के झन्झटों से आजाद हो कर थोड़ी देर के लिए प्रभु की याद में बैठे। बस। उससे फायदा उठाओ। मगर जब तक यह इन्द्रियों के भोग-रस की बू नहीं जाती, काम नहीं बनता।

वही है चाल बेढंगी जो आगे थी सो अब भी है ।

करतूतें तो वहीं है, जो जबान से कहते हो, ज्ञान-ध्यान छाँटते हो तो क्या फायदा है ।

हंस बसे सुख सागरे झीलर नहीं आवे ।
मुक्ताहल को छाँड के कहूं चुंच न लावे ॥

हंस कहां रहते हैं ? समुन्दरों पर ! कैसे समुन्दरों पर ? सुखों का जो समुन्दर हो, All - consciousness के समुन्दर में वह गोता लगाये बैठे हैं, जाग उठे हैं। वह झीलों पर नहीं जाते हैं। झीले आपको पता है क्या होती है। वह खड़ी होती है। समझे ! चलता पानी हो हमेशा। समुन्दर में क्या आता है ? हजारों दरिया जाते हैं और फिर बुखारात (भाप) बनते हैं, फिर दरिया बनते हैं। लोगों को फैज़ (परमार्थ लाभ) पहुंचता है। फिर समुन्दर जैसे बन जाते हैं। सबको वह सुख देता है। समझे ! यह उसका खासा (गुण) है। कहते हैं, वह सुख के सागर हैं, समुन्दर हैं। वह झीलों में नहीं जाते। झीलें किसको कहते हैं ? वह, Shrouded होती है न, खास दायरे में कैद। जो कैद चीज़ है, वहां क्या होगा ? Stagnation and stagnation will be followed by deterioration. पानी खड़ा हो जाये वहां बदबू पैदा होगी कि नहीं ? यह हंस गति वालों की कहानी है, मुक्त पुरुषों की।

कबीर साहब ने थोड़ा जिक्र किया, फर्माते हैं कि एक हंस एक खेत पर आ बैठा जिसमें कोदरा था। कोदरा एक बड़ा मामूली दर्जे का अनाज होता है। जो जमींदार था, वह डन्डा ले कर गिरद हो गया कि उड़ जाओ भई ! समझे ! कहते हैं भोले जमींदार को पता नहीं कि हंस

तो कोदरा खाते ही नहीं। वह तो मोती खाता है। जो आजाद पुरुष है ना, मुक्त पुरुष हंस वृत्ति रखने वाले, हर एक समाज में आये। कहते हैं दुनियां के लोग जो तंगदिल, तंग दायरों में कैद हैं, कहते हैं, ओ हमारी समाज लुट गई, हमारी समाज की कमी हो गई, यह वह। डन्डे ले कर गिर्द हो जाते हैं। कहते हैं, वह तो सुखों के समुन्दरों का बासी है। सुख के समुन्दर में गोते लगा रहा है। अरे भई वह झीलों में Stagnation में कब आयेगा। याद रखो जहां ऐसी जगह बन जायेगी, तंग-नजरी की तालीम दी जायेगी। यही कारण हैं, मुआफ करना, कि हम एक दूसरे से नफरत कर रहे हैं। World relgions conference (विश्व-धर्म सम्मेलन) में सबसे पहली बात जो पेश की गई, वह यही थी। अरे भई हर एक समाज School of thought है। हम इन स्कूलों में दाखिल हुए, Badges (चिन्ह-चक्र) वैसे लगाये,किसी ने ऐसा लगाया, किसी ने वैसा लगाया किसी ने दूसरा लगाया हर एक समाज का, है तो आत्मा देहधारी हंस कि नहीं ! हंस रहता है समुन्दरों पर, तालाबों पर। नहीं समझे ? तो कहते हैं जो आजाद, मुक्त पुरुष हैं, वह किसी बन्धन में नहीं। वह आज़ाद होता है, मुक्त है। मुक्त कर देते हैं। यह उनका कायदा है, खुद आज़ाद है, तुमको आज़ाद करने आते हैं, गुरु नानक साहब ने क्या कहा, यह आजादी का समुन्दर कहां मिलता है। गुरु नानक साहब पहिली बादशाही की बाणी हैं। फर्माते हैं -

जिस जल निध कारण तुम जग आये ।
सो अमृत गुरु पाहि जियो ॥

जिस हर एक किसम की निधि, खुशियाँ देने वाले जल की खातिर तुम दुनिया में आये हो, मनुष्य जीवन पाया है, वह गुरु से मिलता है, कहते हैं, क्या करो ? ''छोड़ो'' यह लफ्ज है, क्या ?

छोड़ो वेस भेख, चतुराई, दुबिधा, एहफल नाहिं जियो ।

तुम आजाद होना चाहते हो, मुक्ति को पाना चाहते हो ।

मुक्ते सेवे सो मुक्ता हो ।

किसी समाज में, किसी मुक्त पुरुष के चरणों में बैठो, तुम मुक्त हो जाओगे। वह यह नहीं कहते कि किसी समाज में न रहो। वह कहते हैं, उनकी (समाजों की) जकड़ों में न रहो। रहो किसी समाज में। किसी समाज में रहना एक बरकत है। नहीं तो Corruption हो जायेगी या नई समाजें खड़ी करनी पड़ेंगी। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) फर्माया करते थे कि कुऐं आगे ही बहुत लगे पड़े हैं और नया कुआँ लगाने की क्या जरूरत है ? रहो किसी समाज में। समाजों का ताल्लुक तुम्हारे जिसम से है। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। Into

the beyond (अन्तर दिव्य मण्डलों में) Traverse (सफर) करो, तुम्हारी मुक्ति Reserved (पक्की) हो गई। उसके लिए सदाचारी जीवन बनाओ। ''छोड़ो भेस'' वेसों भेखों की जकड़ों में न रहो। रहो, किसी समाज में पैदा होना बरकत है इतने ऊंचे चढ़ जाओ कि सारी मनुष्य जाति तुम्हारी एक समाज बन जाये।

मानुष की जात सब एके पहिचानिबो ।

मनुष्य जाति सब एक समाज बन जाये। यह आदर्श हर एक समाज के सामने है। हम सिर्फ विवेक न होने के कारण समाजों के पशु बने रहते हैं। हम किताबों के पशु बने रहते हैं। हम शख्सियतों (व्यक्तियों) के पशु बने रहते हैं। Paid (पेट) प्रचार ने हर एक समाज में अधोगति फैलाई है। यह है नजरिया (दृष्टिकोण)। लोग पूछते हैं कि World religions conferences (विश्व धर्म सम्मेलन) में किस बात के लिए गये। अरे भई मिल बैठो, इस बात को जानो कि -

सैंकड़ों आशिक हैं, दिलाराम सबका एक है ।
मजहबो मिलत जुदा है, काम सबका एक है ॥

चार शराबी तो मिल कर गले लग कर बैठ सकते हैं, किसी समाज के हों। चार प्रभु भक्त किसी समाज के नजदीक नहीं बैठ सकते। किस कारण ? आदर्श को भूल गए। बस विवेक नहीं रहा और क्या है ।

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) की यही तालीम थी कि एक Common ground (साँझी धरती) रखो जिस पर सब समाजों के भाई इकट्ठे हों। यह उन्नीस सौ पैन्तीस (1935 ई.) में किताब लिखी गई थी, ''गुरुमत सिद्धान्त'' कि आईन्दा आने वाली नस्लों पर कौन सी Common ground है जिस पर सब मिल कर बैठ सकते हैं। इस बात का नजरिया पेश किया गया था। आज Practical वह सामान हमारे सामने आ रहा है। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है कि किसी समाज में रहो, तालीम महापुरुषों की वही है। हम तालीम की तरफ नहीं जाते, हमारी जो कागवृत्ति है, वही हमको तंग करती है। विवेक, बुद्धि पैदा करो, हंस बनो। तुम हंस हो भई। क्या कहते हैं, हंस क्या करते है ? मोती खाते हैं। कहीं और पानी नहीं पीते, चोंच नहीं डुबोते। किसी समाज में हो, सब समाजें उनको प्यारी हैं। सब आत्मा देहधारी है। क्या फर्क है इन्सान और इन्सान में ? यह फर्क हमनें बनाए हैं।

मैं मग़रिब में गया। वहां पर लोगों ने Conference बुलाई और मुझे चुना कि तुम East (पूर्व) को Represent करो (प्रतिनिधि बनो)। West (पश्चिम) का प्रतिनिधि जो चुना

गया, उसको फ्रांस से आना था। इत्तेफ़ाक ऐसा हुआ कि उस दिन वह नहीं पहुंचा। तो उन्होंने कहा, Now we leave both east and west to you. तो मैंने कहा, भई इसमें शक नहीं कि यह कहा गया है कि, East is East and West is West, and the two shall never meet. अर्थात पश्चिम, पश्चिम है और पूर्व, पूर्व वालों के लिए है और यह दोनों आपस में कभी इकट्ठे नहीं बैठ सकेंगे तो मैंने कहा It is we who have said these words for we have had no first-hand experience of the Truth. (यह उन लोगों का कहना है जिनको हकीकत का अपना अनुभव नहीं) अरे भई यह सारी सृष्टि, उस प्रभु की है, उसका घर है। जितने मुल्क हैं, उसमें कमरे हैं, अलेहदा अलेहदा हवाई जहाजों ने तो सब फासला (अन्तर) खत्म कर लिया। आज चढ़ो, कल इंग्लैण्ड पहुंच जाओ। East, West, North, South (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) हमने बनाये। उसने (प्रभु ने) तो एक घर, यह सारा जहान बनाया।

एह जग सच्चे की है कोठड़ी सच्चे का विच वास।

बस। कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर वह नहीं।

जेता कीता तेता नांव बिण नावें नाही कोई थाओं ।

यह है नजरिया उनका। कहां की द्वैत। यह (द्वैत) भई गलत प्रचार का नतीजा है, जो Paid प्रचार हर एक समाज में हो रहा है। बजाये मिलाने के खलीजें (भेद) पैदा कर रहा है, Selfishness (स्वार्थ) और Greed (लालच) हमको एक दूसरे से दूर ले जा रहे हैं। बस। प्रचार करना अधिकार था अनुभवी पुरुषों का। Paid प्रचार का नतीजा है कि एक समाज का भाई दूसरे की शक्ल नहीं देखता। कोई Common ground हमारी नहीं जिस पर हम सब मिल कर बैठ सकें। मैं तो सच कहता हूं, अगर हमारे महापुरुष जिनके हम नाम लेवा हैं, आज वापस आ जायें हमारी हालत देखने के लिए, तो वह कहेंगे, यह हमारे Followers (अनुयायी) नहीं है । क्योंकि हम उनकी तालीम पर नहीं चल रहे हैं और क्या कर कहें?

मानसरोवर की कथा बगुला क्या जानैं ।
उनके चित्त तलिया बसैं कहो कैसे मानैं ।।

कहते हैं, हंस और बगुला एक ही शकल रखते हैं। हंस और बगुले में बड़ा भारी फर्क है। हंस मानसरोवर पर रहते हैं, जहां मोती चुगते हैं, विवेक रखते हैं और बगुला शक्ल तो जरूर वही रखता है, मगर अन्तर से, जहां इन्द्रियों के भोग-रस की मछली आई, हड़प कर गए। बस। फिर कहते हैं, एक बगुला इन्सान, एक हंस की गति को कैसे जान सकता है ? उसने उस Level से देखना है ना। उसके दिल दिमाग में दुनियां का रंग चढ़ा पड़ा है। वह उसको

पहिचान ही नहीं सकता है। आपको पता है, जब भी अनुभवी पुरुष दुनिया में आये हैं, उनकी मुखालफ़त (विरोध) हुई है। किन्होंने की ? पढ़े लिखें, आलिमों, फ़ाजिलों ने, पण्डितों ने ! कौन ? जो बगुले थे, मुआफ करना। जिनकी कागवृत्ति थी। अनुभवी पुरुष नहीं थे, विवेक नहीं था। गुरु नानक साहब थे। उनको कुराहिया कहा गया, कि लोगों को खराब करता है। अरे भई यह अकले खराब करना है, जो आपको पेश किया जा रहा है, तुम्हारी बिगड़ी बात बन जाने की बात हो रही है। समझने का Right import (सही मायने समझने) का सवाल है। कसूर के शहर में उनको दाखिल नहीं होने दिया। पल्टू साहब को जिन्दा जला दिया। फिर ! शम्स तबरेज की खाल उतारी गई। मन्सूर को सूली पर चढ़ाया गया। अरे भई जो सच कहेगा, जो ठेकेदार हैं, मुआफ करना, विवेक से रहित पुरुष हैं, वह मुखालफत करेंगे। वह तो समुन्दरों के भई रहने वाले हैं। उनको झीलों, तालाबों और छप्पड़ों से क्या काम ! सब उनको प्यारे हैं। वह कहते हैं, छप्पड़ों से उठो, झीलों में आ जाओ। झीलों से उठो, समुन्दर में आ जाओ। यह मजहब क्या है, मुआफ करना ? दरिया के किनारे या समुन्दर के किनारे यह अलेहदा अलेहदा छप्पड़ हैं। समुन्दर में नहाने के लिए यह छप्पड़ बने थे। अगर छप्पड़ों ही में रहे, समुन्दर में गोता नहीं लगाते तो जीवन बरबाद चला गया। रहो किसी समाज में, फिर मैं यह अर्ज करूंगा। रहो, नहीं तो Corruption हो जायेगी, या नई समाज खड़ी करनी पड़ेगी। क्यों वक्त जीवन का जाया (नष्ट) करना चाहते हो ! जहां हो, कुदरत ने जहां रखा है, रहो। जिस गर्ज के लिए तुम जिस समाज में हो, उस गर्ज को पाओ। उसके लिए जिन्होंने पाया है। उनकी सोहबत करो। नाम कुछ रख लो उनका। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं-

मानसरोवर की कथा बगुला क्या जानै ।
उनके चित्त तल्लिया बसै कहो कैसे मानै ॥

देखिए, मिसाल आती है कि एक कछुआ था। समुन्दर में रहने वाला, वह कहीं एक तालाब में आ गया। वहां जो कछुआ रहता था उसको कहने लगा भाई, समुन्दर तुम्हारा कितना बड़ा है ? उसने छलांग मारी, जरा पीछे आ गया। इतना कि नहीं इससे भी बड़ा है ? और छलांग मारी कि नहीं इससे भी बड़ा। फिर सारा चक्कर लगा लिया कहने लगा इससे भी बड़ा ? कहने लगा फिर झूठ है क्योंकि उसका उस तालाब से ज्यादा नजरिया ही नहीं बना। जिसने देखा है, वह कहता है बड़ा है। बात समझे !

याद रखो जकड़ों में रह कर तुम्हारी कभी कल्याण नहीं होगी। रहो जरूर यह एक बरकत है। मगर जिस गर्ज के लिए शामिल हुए हो, उस गर्ज को आंखों से हटाओ नहीं। उस चीज को पाने के लिए समाज का Lebel लगाया है। मनुष्य जाति का जो लेबल है वह कुदरत ने लगाया है उसमें आओ। Return to nature कुदरत की तरफ वापस आओ। वह सब आगे ही एक

है। परमात्मा ने तो इन्सान बनाये हैं। समाजें हम लोगों ने बनाई हैं। इसमें शक नहीं जो समाजें बनाई गई थी। वह आत्म उन्नति के लिए बनाई थी। आत्म उन्नति के लिए ना, हम समाजों के लिए नहीं बने, समाजें हमारे लिए बनाई गई। हमने इससे फायदा उठाना था। हम इनकी जकड़ों में फंस गए, झीलों में या तालाबों में। समुन्दर का पता ही नहीं। यह है नज़रिया अनुभवी पुरुषों का। वह आत्मा के Level से सबको देखते हैं।

सतगुरु ऐसा जानिये, जो सबसे लये मिलाई जियो ।

वह देखता है, सब आत्मा देहधारी हैं Level ख्वाहे कोई लगा लो वह कहता है बैठ जाओ और अपनी असलियत की तरफ वापस लौटो। जो जकड़ों में पड़े हैं बाहर की, वह ख्याल भी नहीं कर सकते, यह कैसे हो सकता। अरे भई इसी आदर्श के लिए हम समाजों में दाखिल हुए थे।

एक घड़ी है। अगर वह घड़ी वक्त देने से रह गई है, फिर ख्वाहे वह सोने की बनी हो, या उसमें Diamond लगे हों। किसी समाज का आदर्श उसकी अच्छी इमारतों से नहीं यह याद रखो। किसी समाज में कीमत बाहरी बनावट के लिहाज से नहीं कि उसकी बड़ी बिल्डिंगे हैं, बड़ी जायदादें हैं या बड़ी आमदन है या हजारों लाखों आदमी जाते हैं। यह नहीं। सवाल यह है कि वहां क्या मिल रहा है ? वहां Main making हो रही है कि नहीं। यह आदर्श है। किसी समाज में रह कर तुम इस चीज को पा सकते हो। मानुष जाति को एक जानो You are a man, be a man, इन्सान बनो।

कबीर साहब से पूछा गया कि इन्सान का आदर्श क्या होना चाहिए ? तो मिसालें खुद ही देते हैं, खुद ही समझाने के लिए, फर्माते हैं, ''रोड़ा हो रहो बाट का''। रास्ते के रोड़े बन जाओ। कहते हैं नहीं, वह भी ठीक नहीं है। ''पंछी को दुःख दे''। कहते हैं पंछियों को दुःख मिलता है, मारने को। फिर कहते हैं, ''ज्यों धरनी में खहे''। जैसे मिट्टी होती है। कहते हैं, ''उड़ उड़ लागे अंग''। यह भी आदर्श ठीक नहीं। कहते हैं, पानी की तरह बनो। वह भी कहते हैं, ''ताता सीता हो''। कभी गर्म कभी सर्द है, कहते हैं फिर कैसा होना चाहिए हरीजन को। ''हरीजन हरी ही जैसा चाहिए''। हरी ने पैदा किया सारा संसार। समदर्शी बनो। Peace be unto all the world over. यह हमारा आदर्श है। अब World Religions Conference में आखरी आशीर्वाद के वक्त तो सबने कहा कि आप भी आशीर्वाद इनको दो। मैंने उस समय यही कहा। यही लफ्ज मैंने पेश किए।

नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणें सरबत का भला।

तो हर एक समाज वाले भाईयों ने अपने वेदों में से, शास्त्रों में से, ग्रन्थों में से यही चीज पेश की कि सब महापुरुष यही कहते हैं। हमने क्या करना था। क्या कर रहे हैं, फंसे बैठे हैं। मुआफ करना। बड़े प्यार से समझा रहे हैं -

हंसा नाम धराय के बगुला संग भूले ।
ज्ञान दृष्टि सूझे नहीं वाही मति भूले ॥

यह हंस था बुगले की सोहबत में आ गया। अपनी चीज को भूल गया, विवेक को। उनकी सोहबत का रंग मिलता है। याद रखो जो चीज फैलाव में जा रही है ना, पानी बहते की तरफ जाना बड़ा आसान काम है। आसानी से चला जाता है। वहां कोई तकलीफ नहीं करनी पड़ती। घबराओ नहीं, खाली पाँव मारते चलो, आराम से चले जाओगे। लेकिन Against stream (बहाओ से उलट) जाना मुश्किल है। इन्द्रियों का फैलाव बाहर की तरफ है। यह जिसम है, बड़ा कीमती, इसमें इन्द्रियों के दरवाजे लगे हैं, जो बाहर की तरफ खुलते हैं, अन्तर नहीं खुलते। समझे। तो बाहर देखना, बाहर के संस्कार लेना Superficial जीवन बनाना, यह कुदरती बन जाता है। बड़ा आसान तरीका है। बाहर बहना बड़ा आसान है। तो बुरी सोहबत किसको कहते हैं ? जो इन्द्रियों के फैलाव में तुमको ले जा रही है, उसका नाम है बुरी सोहबत। तो सोहबत का रंग जल्दी चढ़ता है। अब अन्तर में हर एक को एक Way-up है। एक दरवाजा है, उस तरफ आंख का खुलना, उधर हटना, जो दरवाजे बाहर ही खुलते हैं, अन्तर खुलते ही नहीं, इसलिये हमें अपने आपकी सूझत नहीं। एक अन्तर दरवाजा है,सबका। वह बन्द है। वह दिव्य चक्षु है। वह अनुभवी पुरुष जिसका खुला है। वह खोल देता है। थोड़ा अन्तर ज्योति का विकास कर देता है। प्रणव की ध्वनि जारी हो जाती है। Light and sound principle ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग, That is way back to God. वह Absolute God है। अन्तर दो ही मार्ग है भगवान कृष्णजी ने गीता में फर्माया है कि दो मार्ग है अन्तर में। एक पितरियान पन्थ है, एक देवियान पन्थ है, दिव्य ज्योति का मार्ग। उसमें यह लिखा है कि जो पितरयान या कर्मकाण्ड के रस्ते जाते हैं, वह जीव आता जाता रहता है। जो ज्योति मार्ग में जाती है जो रूह, वह वापस नहीं आती है। सारे महापुरुष यही कहते हैं। सनातनी भाईयों में जब अन्त समय आता है। तो कहते हैं, जल्दी करो दीवा मंसाओ। नहीं तो बेगता मर जाएगा। जीते जी ज्योति का विकास कब आता है, जब इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ।

दस इन्द्रे कर राखे बास। ताके आत्मे होय परगास ॥

जो ऊपर लौ को लगाना सीख कर अन्तर में ज्योति का मार्ग है। उसका दीवा तो मन्सा गया। महापुरुष ऐसे के चरणों में बैठो जो पहिले दिन तुम्हारा दीवा मन्सा दे। झगड़ा पाक कर दे। फिर उसको दिनों दिन बढ़ाओ। ऐसे ही महापुरुषों की तारीफ वेद, शास्त्र, ग्रन्थ पोथियां गाती रही, गाती हैं और गाती रहेंगी। सत्संग Intellectual wrestlers का, न चातुरों की सोहबत का नाम है। यह सत्संग नहीं है।

पूरे गुरु ते सतसंग उपजे ।

पूरे गुरु, अनुभवी पुरुष ही की सोहबत का नाम सतसंग है। जो जागता है, तुमको जगा देगा। जो मुक्त है, तुमको मुक्त कर देगा। जो खुद इन बन्धनों में किसी बन्धन में है, वह तुमको बन्धन ही में रखेगा। अनुभवी पुरुष का नजरिया है -

मानुष की जात सब एके पहिचानिबो ।
सतगुरु ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाई जियो ॥

बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि बगुले की सोहबत में हंस अपनी चाल भूल गया। दुनिया बह रही है जिस तरफ, उस तरफ बड़ी आसानी से बहता है। अगर तुम उल्टे हो उनसे तो वह कहते हैं इसकी अकल खराब है। इसको क्या हुआ ? और आज क्या होता है हमेशा होता रहा है यही और आज भी ऐसे ही है ।

हंसा नाम धराय बगुला संग भूले ।
ज्ञान दृष्टि सूझे नहीं वाही मति भूले ॥

हमारे हजूर एक मिसाल फर्माया करते थे कि एक शेर का बच्चा था। किसी पाली ने उसको पाल लिया। बकरी भेड़ों में मिला दिया। उसकी सोहबत से उसने समझा मैं भी बकरी हूं। एक शेर गुज़रा, उसने देखा यह शेर का बच्चा यहां कहां से फंसा बैठा है। उसको बुलाया। पानी के किनारे ले गया कि देखो तेरी मेरी शक्ल एक है कि नहीं ? कि हां। कहता है मैं भी गर्जता हूं, तू भी गर्ज। जब वह गर्जे तो पाली भी भाग गया, बकरियां भी भाग गई। बात समझे, कि बात क्या है ? अनुभवी पुरुष तुमको कहता है भई तुम हंस हो हंस। उन लोगों में फंस कर बह रहे हो। कहते हैं क्या करें जी दुनिया बड़ी जबर्दस्त है। अरे भई, अनुभवी पुरुष हमेशा आजाद रहा है। हजारों में एक लाखों में एक खड़ा होकर आवाज देता है भई बात क्या है। कहता है मैंने देखी है, तुम देख सकते हो। यह बढ़ाई तो है और केवल ऐसे ही पुरुषों की यह कहानी है।

ज्ञान दृष्टि सूझे नहीं वाही मति भूले ।

उसका अनुभव खुला नहीं वह भूला रहता है, जब देखता है। ओहो ! सचमुच बात यही है। फिर आंख खुलती है।

हंसा उड़ हंसा मिलें बगुला रहे नियारा ।
कहें कबीर उड़ ना सके जड़ जीव बिचारा ॥

कहते हैं जो हंस है। वह उड़ कर इकट्टे हो जाते हैं।

कबूतर बा कबूतर बाज बा बाज ।

जो हंस हैं। हंस मिल बैठते हैं और जो बगुले हैं वह उनसे दूर रह जाते हैं। वह उनको मिल नहीं सकते, क्योंकि उड़ नहीं सकते हैं। हंस वृत्ति ऊपर इन्द्रियों के घाट से ऊपर Fly करते हैं। नई दुनिया में जाते हैं। उड़ने वाले सब इकट्ठे हो जाते हैं। जो जिस्मों के बन्धनों में कैद हैं, वह सब अपनी जगह रह जाते हैं। बड़ी अच्छी मिसाल दी है। आप देखेंगे कि महापुरुष जब भी आते रहे, अनुभवी पुरुष आपस में मिलते रहे। ब्यासजी का जिकर आता है कि वह ज़रतुश्त को मिलने गये। हजरत ज़रतुश्त को Zoroaster को,समझे। मिरजा तकी तुलसी साहब के पास आये। जैसे आजकल Scientific conferences होती हैं। ऐसे ही पहिले अनुभवी पुरुषों की होती थी। मिल कर बैठते थे, विचार करते थे कि बात क्या है ? अब World Religions Conferences में क्या हुआ ? इसी बात को पेश किया। भई पुजारी तो एक है। सबको एक जैसे Concessions मिले हैं। यह झगड़े काहे के हैं ? उनमें से कई मुतलाशी (जिज्ञासु) भी हैं हकीकत को पाना चाहते हैं। मगर यह चीज न मिलने के कारण वह बिचारे सरगरदान (परेशान) हैं तो मिल बैठने में बड़ी भारी बरकत है याद रखो। मिल बैठना सीखो।

होय एकत्र मिलो मेरे भाई। दुबिधा दूर करो लिब लाई ॥

हम एक दूसरे से नफरत करते हैं। अगर किसी के पास ज्यादा चीज है, तो पेश करो। Truth is one. यह कहो कि आगे नहीं थी, अब है। यह गलत है। दो और दो चार। Truth is one. हमेशा ही महापुरुषों ने तरीके तरीके से बयान किया है, जो अनुभवी पुरुष हैं, जो हमको उस Truth के साथ जोड़ दे, हम उसी के पुजारी है। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) थे, जिनकी बरकत से यह सिलसिला चल रहा है। वह यह फर्माते थे कि हमने तुमको एक सच चीज दी है। अगर इससे अच्छी चीज मिले, तुम भी जाओ और मुझे भी कहना, मैं भी जाऊंगा। अरे भई हम Truth के पुजारी हैं ना, समाजों के पुजारी तो नहीं। समाजों में इसलिये दाखल हुए थे कि हम Truth को पायें। अगर इस नजरिया को भूल जायेंगे, कशमकशें होगी, हो रही है। इस आदर्श को रखोगे, सबका प्यार हो जायेगा। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। जो बगुले हैं, इन्द्रियों के घाट के वह कैसे हमारी रीति को समझेंगे, वह तो कहेंगे, हम कैसे करें ? हम कैसे छोड़े इन्द्रियों का घाट। अरे भई पिण्ड (शरीर) तो छूटेगा एक दिन। अब ही छोड़ना सीख जाओ। दिव्य मण्डल का तजरूबा होगा। मौत का खौफ (भय) नहीं रहेगा। इसीलिए मैंने अर्ज किया था कि -

मुक्ते सेवे सो मुक्ता हो ।

जो मुक्त पुरुष हैं, तुमको आजाद करेंगे। जो खुद ही मुक्त नहीं वह क्या करेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि आप किसी समाज में न रहो। गलत फहमी में न जाना, रहो जरूर। It is better to be born in a temple but to die in it is sin. जकड़ों में न रहो। इतने ऊंचे चढ़ो कि -

मानुष की जात सब एके पहिचानिबो ।
आई पन्थी सगल जमाती, मन जीते जग जीत ॥

यह कबीर साहब का एक छोटा सा शब्द था। थोड़ा सा और एक ले लो छोटा सा शब्द। क्योंकि कहते हैं आज से होली शुरू हो गई है ना। छोटा सा शब्द है कबीर साहब का,गौर से सुनिये-

कोई मो पे रंग न डारो, मैं तो भई हूं बौरी ।

कबीर साहब फर्मा रहे हैं, एक ऐसी आत्मा का जिकर जो प्रभु के साथ जुड़ना चाहती है। उसकी बैरागिन बन चुकी है। याद रखो, हर एक इन्सान के सामने आदर्श क्या है, कि उसकी आत्मा प्रभु से जुड़े। जुज्व (अंश) कुल (स्रोत) से मिलना चाहता है। जब इन्द्रियों के भोगो-रसो से हटोगे ना, यह ज़ज़बा अपने आप अन्तर से उगेगा। एक बैलून हो। आजकल तो शायद रहे नहीं, Hydrogen gas आगे होती थी, आज तो हवाई जहाज बन गये ना, पहिले बैलून होते थे Hydrogen gas के। उनको रस्सियों से बांध दिया जाता था जमीन से जब रस्सियां खोल दी जाती थी तो जमीन से उड़ जाता था। अरे भाई हमारी सुरत मन इन्द्रियों की रस्सियों से बन्धी पड़ी है। अगर उधर से हटे, अन्तर्मुख हो तो यह उड़ना चाहती है। कुदरती बात है। Natural in it. इसकी जातियत में शामिल है (इसका स्वभाव है) कहते हैं, ऐ भाईयो, बाहर के रंग मुझ पर न डालो, बाहरमुखी न ले जाओ। यह इन्द्रियों का बाहरी सिलसिला है। कहते हैं मेरी आत्मा में लगन लगी है उस (प्रभु) से मिलने की। इन्द्रियों से हट गई, बाहरी जकड़ों से आजाद हो गई, अब जुज्व (अंश) कुल (अंशो) से मिलना चाहता है। बस। जो बैरागिन प्रभु की बन गई है, उसे वही चाहिए ना।

गुरु अर्जुन साहब थे। महापुरुष जब भी आये यही नजरिया पेश करते रहे। उन्होंने क्या किया, आपको पता है ? एक Common ground बनाई सब समाजों के जो महापुरुष मिल सके उनकी बाणी सब इकट्ठी कर दी। समझे ! कबीर साहब जुलाहे, फ़रीद साहब मुसलमान, नामदेव छीपे और रविदासजी चमार और सज्जन ठग की भी बाणी दी। गुरु साहिबों की बाणी भी जो मिल सकी, एकत्र कर दी। भई हमारा आदर्श यह है। उन्होंने एक Banquet hall of spirituality कायम किया और यही एक Common ground है जिस पर आप सब मिल

कर बैठ सकते हो। अगर आप भाईयों का ख्याल हो कि सबकी शकलें एक बन जाऐं एक से Badges (चिन्ह चक्र) लग जाऐं या एक सी सब रस्में हो जाये, यह न हुआ है न हो सकता है। रस्म रिवाज अलेहदा अलेहदा हैं, Mode of thinking (विचार धारा) और Temperaments (स्वभाव) अलेहदा अलेहदा हैं, इसलिए यह कभी नहीं हो सकता। हां आदर्श एक हैं, उसकी तरफ नजर मारोगे एक दूसरे से मिलकर बैठोगे। मैं भी उसी का (प्रभु का) पुजारी तुम भी उसी के पुजारी फिर झगड़ा काहे का है भई !

रजब निशाना एक है तीरअन्दाज अनेक ।

आदर्श को नहीं भूलो। इस आदर्श को पाने के लिए तुमको मनुष्य जीवन मिला था। इसका Best use करो। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) फर्माया करते थे कि जो लोग इन्द्रियों के भोगो-रसों में लम्पट हैं वह अपनी गर्दन अपनी छुरी से काट रहे हैं। जो भजन सुमिरन करके अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ना चाहते हैं। वह अपने आप पर रहम कर रहे हैं। मनुष्य जीवन से फायदा उठाओ । कितना ऊंचा आदर्श है।

तो कहते हैं, ऐ भाईयों, मुझ पर रंग न डालों, मेरी आत्मा में एक और रंग लग रहा है। दुनिया का रंग उतर गया। मुझे अब वह लगन है, उसके बगैर मुझे अब शान्ति नहीं। किसी समाज में रहो, यह रंग जिसकी आत्मा में आ जाए, ''मीरा भई दिवानी'' महापुरुष सब यही कहते हैं जिसके अन्तर यह रंग आ जाए सारी दुनियां पागल है, याद रखो, दीवानगी है। स्वामी रामतीर्थ से कहा गया कि अरे भई जो कुछ तुम कहते हो यह पागलपन न हो, दीवानगी न होगी। कहने लगे भई, इस दीवानगी पर हरफ़ उठाने का (आलोचना करने का) उसको हक है, कि जिस को दोनों तरफ का तजरूबा हो। दुनिया का तो तुम लोगों को है। इसका भी तुमको थोड़ा तजरूबा हो, फिर तुम फैसला करो कि तुम पागल न हो गये हो। कहते हैं, हाँ हम गल को पा कर, बात को पाकर, पागल हो गए। तुम ऐसे ही, तुमको कुछ चीज मिली नहीं, भटक रहे हो। वह उनके लिए दीवाने और पागल हैं दुनियां की नजर में, और उनके लिए दुनियां पागल है। इसलिए महापुरुष क्या कहते हैं ? कबीर साहब फर्माते हैं -

'' या जग अन्धा ''

सारा जहान ही अन्धा है, भई, कहते हैं -

'' इक दो होय उन्हें समझाऊं ''

एक दो हो तो उन्हें समझाया जाए। सारा जहान ही अन्धा है। किया क्या जाए। यह उनका नजरिया है तो दिव्य चक्षु जिसकी खुली नहीं, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर आजाद हवा में उड़ना सीखा नहीं है। उसका नजरिया बन ही नहीं सकता है। जो समुन्दर के उड़ने वाला है, वह झीलों पर,तालाबों पर कभी नहीं जाएगा।

कोई मोपे रंग न डारो मैं तो भई हूं बौरी ।

बाहर की आलायशे (मैलें) बनावटी रंग क्या काम देंगे। जिसकी आत्मा में लगन लग गई प्रभु की, किसी समाज में हो, वह आत्मा मुबारक है।

इक तो बौरी दूजे बिरहा की मारी तीजे नेह लगो री ।

कहते हैं, मैं तीन चीजों से व्याकुल हो गई। मुझे कुछ सूझता ही नहीं। इस दुनिया में कोई चीज़ है या नहीं, यह चन्द रोजा हैं, जो दुनियां में इसमें भूल रही है। मैं भी बौरी हूं। इसमें क्या मिला ? मिला क्या, कुछ भी नहीं। दूसरी अन्तर लगन लग गई, बिरहा, सोज़ और गुदाज़ है तड़प है। आत्मा, जुज्व, कुल से मिलना चाहती है। उसके बगैर चैन नहीं है। आत्मा चेतन स्वरूप है। अगर इसको सुख हो सकता है तो महाचेतन प्रभु के चरणों ही में जा कर हो सकता है। जड़ पदार्थ इसको कभी सन्तुष्ट नहीं कर सकते। मन की तृप्ति अगर हो सकती है तो नाम से, परिपूर्ण परमात्मा से Contact करने (जुड़ने) ही में हो सकती है।

नाम मिलिये मन तृपतिये ।

और कोई जरिया नहीं तो क्या कहते हैं, एक तो बौरापन है दुनिया में, कहती है पागल है। ''दुनियां कहे मीरा भई दीवानी''। दूसरा अन्तर में बिरहा, लोग कुछ कहते हैं, अन्तर से बिरहा तंग कर रही है। याद रखो बिरहा पेशखेमा (सूचक) है, प्रभु के आने का। समझे ! जब बारिश आती है तो पहिले बादल आया करते हैं। बादल न हो तो बारिश की कोई उम्मीद नहीं है। अरे भई जिस दिल में सोज़, बिरहा, गुदाज़ कहो, छम-छम आंखों से पानी बहना कहो, यह है पेशख़ेमा प्रभु के आने का।

जिन पाया तिन रोय। हंसी खुशी जो पिया मिले, तो कौन दुहागण होय ॥

जो बाहर के रंगों में आलायशों में (विकारों में) ऐशो-इशरत (भोग विलास) में फंस रहे हैं, अरे भई उनकी यह गति कहां है। कहते हैं, मेरी आत्मा में, एक तो दुनियां कहती है यह बौरी हो रही है,कोई साथी नहीं मिलता जिससे बैठ कर मन का हाल खोले कि भई बात क्या है। समझे । गुरुबाणी में आता है कि -

आओ मिलो अंग सहेलियो ।

हम आत्मा हैं, सब सहेलियां हैं। जिसको वह लगन ही है, वह मिल जाए तो भी थोड़ी राहत हो जाए। समझे ! और तीसरे अन्दर नेह लग गया। निहडा, लगन, आत्मा में बड़ी भारी कशिश हो रही है। उसके बग़ैर रहा नहीं जाता है। तीन चीजें कहते हैं बेहाल कर रही है। हमको दुनियां बेहाल कर रही है, मुआफ करना। बाहर के रंग, ऐशो-इशरत बाहर को रंगने, भोग, उसको अन्तर की आत्मा को अन्तर में लगन लगी है। अगर इधर से हटे तो यह जज्बा (भाव) उभर कर ऊपर आ जाए अपने आप।

राबिया बसरी एक फ़कीर हुई हैं। उससे पूछा गया कि ऐ, राबिया तू यह बता कि तू जब नमाज़ पढ़ती है तो खुदा पहिले आता है कि तेरे नमाज पढ़ने के बाद खुदा आता है ? उसने कहा कि खुदा पहिले आता है, पीछे मैं नमाज पढ़ती हूं। पूछा, तुम्हें कैसे मालूम होता है? कहते हैं, जब दिल में बड़ी सोज़, गुदाज़, बेहाली छमाछम आंसू बहते हैं, मैं समझती हूं वह धक्का देने वाला आ गया। मैं नमाज़ पढ़ने लग जाती हूं। यह पेश खैमा है।

बिरहा बिहंगम मन वैसे मनत न माने कोय ।
राम बियोगी न जिये, जिये तो बौरा होये ॥

कहते हैं, बिरह का फनियर नाग मेरे सीने पर लोट रहा है। जिसके अन्तर यह बिरहा जाग उठे वह जी नहीं सकता है। अगर जीता है, तो दुनिया में दीवानावार दिन गुजार देता है।

बिरहा बिरहा आखिये बिरहा तू सुलतान ।
जिस घर बिरहा न ऊपजे सो तन जान मसान ॥

जिस दिल में प्रभु के पाने की बिरहा नहीं, कहते हैं वह मसान (शमशान) की तरह है। जीवन बरबाद हो गया। मनुष्य जीवन पाकर जिस आत्मा के अन्तर प्रभु की लगन लग गई, महापुरुषों की सोहबत विवेक से, उसका जीवन सफल हो गया। दुनियां की मोहब्बत तुमको दुनियां में खैंच कर लायेगी, यह याद रखो। बच्चों की, रुपये पैसे की, जायदादों की, मान बड़ाईयों की। ''जहां आसा तहां बासा''। अगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने आपकी होश आ गई,जुज्व में कुल के मिलने का ज़ज़्बा उभर पड़ा है, यही बड़ी भारी बात है। इसके उपजाने के लिए हम सत्संगों में जाते हैं, अनुभवी पुरुषों के पास जाते हैं। समझे ! जैसी सोहबत वैसा रंग।

महापवित्र साध का संग । जिस भेटत लागै हरि रंग ॥

अनुभवी पुरुषों की संगत का नाम ही सत्संग है। Spirituality cannot be taught but caught. याद रखो यह लगन रूहानियत कहो, पढ़ाई नहीं जा सकती। यह छोह (छूत) की तरह सोहबत से ली जाती है। यह Germ असर करते हैं।

पुरे गुरु ते सतसंग उपजे ।

समझे ! खुशबूदार फूल हो, उसको मिट्टी में रखो, मिट्टी खुशबूदार, जिस कमरे में रखो, कमरा खुशबूदार ! अरे भई जहां गन्दगी रखोगे ? जिस हृदय में उसका प्यार, लगन और तड़प है, अरे भई उसकी सोहबत में। उस मण्डल में Charging है, उसका असर पड़ेगा। इसलिये हम महापुरुष की सोहबत में जाते हैं, इस लगन को लेने के लिए। बड़े प्यार से फरमा रहे हैं, इस लगन की, इस कशिश की, इस बिरह सोज की झलक देखनी हो तो कहाँ देखो ? किसी

बिरहन की आंखों में। बस। यह खिड़कियां हैं आत्मा की, बाहर देखने की खिड़कियां हैं। इनमें वह झलक है जो उसकी आत्मा में रंग हो रहा है। आप समझे कि अनुभवी पुरुष की सोहबत क्यों की जाती है ? आलिमों की सोहबत तुमको इल्म की लगन देगी। समझे ! अनुभवी पुरुष की सोहबत तुम्हें आत्मा का रंग देगी ।

तो कहते हैं, बाहरी रंगों की जरूरत नहीं। एक तो बौरी बन रही हूं, दूसरे अन्तर में बिरहा, सोज़ बढ़ रही है। तीसरे खिंची जा रही हूं। आत्मा बेअखत्यार जा रही है और कोई चीज भाती ही नहीं। गुरुबाणी में आता है, गुरु अर्जुन साहब ने फर्माया है कि यह जितने हैं घर-बार के, मुझे जम से नजर आते हैं। लगन कहीं लगी हो तो दूसरे अच्छे लगते हैं कभी ? तो आत्मा में जिसके प्रभु के पाने की लगन हो गई है, वह मुबारिक है। वह पेशखैमा है, प्रभु के आने का। बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि ऐ भाई, बाहरी रंगों को और यह वह को, मुझे न दो। मेरी आत्मा में और लगन लग रही है। किसी समाज में रह कर आपकी यह लगन बन गई, आपका जीवन सफल हो गया। ऐसे पुरुष, मैं यही अर्ज कर रहा था, कि चार शराबी, जिनको शराब के नशे की लगन है, लज्ज़त आई है, जैसी लजत है वैसे रास्ते जाते हुए। आंख देख कर पहिचानता है यह भी शराबी है। आंखों से पहिचाना जाता है। अरे भई, अनुभवी पुरुष से मिले और वह पहिचाने नहीं, यह कभी हो सकता है ? आलिम नहीं पहिचान सकेगा. महापुरुष आते रहे, जो आलिम लोग थे, वही उनसे झगड़ते रहे। मौलाना रूम साहब थे, उनके पास आलिम फ़ाजिल लोग बहस-मुबाहिसा करने को आ गये। कहने लगे, अरे भाईयों अगर तुम आधी रात को सूरज देखते हो तब तो मेरे से बात करो, नहीं तो मेरा वक्त जाया (नष्ट) न करो। आधी रात के सूरज का गुरु नानक साहब भी जिकर करते हैं। आधी रात को फर्माने लगे कि सूरज चढ़ा पड़ा है। घरवाले कहने लगे अकल ठिकाने नहीं है, बूढ़े हो गए हैं। लेहनाजी, जो गुरु बने, कहने लगे, हाँ महाराज, चढ़ा पड़ा है। तो Inner way-up का सवाल है। कहने लगे दिन को नहीं चढ़ता? कहने लगे दिन को भी चढ़ता है, रात को भी चढ़ता हैं, किन को नजर आता है ? जिनकी रूहें पाक हों। बड़ी मोटी बात। गायत्री मंत्र में इसी बात का ज़िकर आता है ना। ''तत् सवितुर वरेणयम।'' फिर ! तालीम जो परम्परा से चली आई है। हम भूलते रहे, महापुरुष उसको ताज़ा करते रहे। अब उस रूह की लगन का सवाल है। अगर यह लगन हम में बन गई तो मुबारिक हो। अगर नहीं बनी तो, ''हनोज दिल्ली दूर अस्त'' (अभी दिल्ली दूर है) सच्ची बात।

कोई मो पे रंग न डारो मैं तो भई हूं बौरी ।
इक तो बौरी दूजे बिरहा की मारी,तीजे नेह लगो री ॥

विरह के मुतल्लिकत ज़िकर आता है, एक शायर (कवि) कहता है कि ऐ हिसाबदान तूने

बड़े हिसाब लगाये हैं, कभी बिरह की रात की लम्बाई मापी है तूने कि कितनी लम्बी होती है? समझे ! इन्तजार बड़ी बुरी चीज है। हाफिज साहब ने तो यहां तक कहा कि ऐ विरह, ऐ फ़िराक, अगर तू मेरे हाथ चढ़ जाए तो मैं तेरे गले में विरह ही की रस्सी डाल दूं कि ताकि तुझे पता लगे कि विरह में कितना दुःख है ? मगर जिसकी लगन रहती है, क्या वह उसको छोड़ना चाहता हूं ? उसमें भी एक लज्जत है। वह छोड़ना भी नहीं चाहता। समझे ! और यह खुशकिस्मती है मैं अर्ज करूंगा। जिसके जीवन में इसकी (विरह की) झलक आई, समझो अब उसका बेड़ा पार होने वाला है। हम दुनियां के लिए दीवाने नज़र आ रहे हैं, सिर पटकते हैं, हाय हाय करते हैं, हौकें लेते हैं। बताओ कितने लोग हैं जो प्रभु की याद के लिए रोते हैं ? किसी महापुरुष का जीवन देखो, सबका यही हाल रहा है। Latest (आज के युग के) स्वामी रामतीर्थ थे। रात सोते थे, सुबह सिरहाना आंसुओं से तरबतर हो जाता था। किसी महापुरुष का जीवन देख लो। गुरु नानक साहब के जिकर आता है, वह क्या करते थे ?

बैद्य बुलाया बैदगी पकड़ ढंडोले बाँह ।
भोला वैद्य न जाणही करक कलेजे मांह ।।

ऐ वैद्य जा, तू मेरी नब्जों में क्या देख रहा है। मेरे कलेजे में करक लग रही है ।

जा बैधा घर आपने ।

हम तो शौह (प्रीतम) से रत रहे हैं, तू क्या देख रहा है ? समझे ! जो इस तरफ गये, वह यही बयान करते रहे। तरजे-बयान (वर्णन शैली) अपना अपना रहा ।

अज़ सरे बालीने मन बरखेज ऐ नादां तबीब ।

ऐ नादान तबीब ! मेरे सिरहाने से उठ जा ।

दर्दमन्दां इश्क ए दारू बजुज दीदार नेस्त ।

जिसको लगन लगी है। वह तो उसको देखना चाहता है। उसको ज्ञान-ध्यान नहीं काम करेंगे। भगवान कृष्णजी थे। एक बार राधे वगैरह गोपियों से दूर चले गये। वह तड़पती थी तो ऊधो को भेजा कि जाओ उनको ज्ञान-ध्यान की बात सुना आओ, कि परमात्मा तुम्हारे अन्तर में है, तुम विरह-सोज़ न करो, यह है, वह है। बड़े ज्ञान-ध्यान की बातें सुनाओ। गये। सुनाई। सुना-सुना कर आखिर, सुनती रही कहने लगी, ''देख ऊधो ! जो बातें तुम कहते हो सांची हैं नारायण ! मगर तू यह बता कि जो उसके देखने की चाह रखती हैं उसके लिए तुम्हारे पास क्या दवा है ? अरे भई जिसकी आत्मा उसका अनुभव करना चाहती । वह बाहरी बातों से कब रीझेगी ? यह तालीम है। किसी समाज में रहो, Join the army of God. प्रभु की

फौज में दाखल हो। प्रभु के प्यारे बनो भई। समाजों में रहकर प्रभु का पुजारी बनना था। यह Recruiting centre थे जिसमें रह कर हमने प्रभु की फौज़ में दाखल होना था।

चाले थे हरि मिलन को, बीच ही अटकियो चीत ।

जो Means (साधन) थे, वह End (मन्जिल) समझ लिये गये। नतीजा क्या है? कुछ भी नहीं। जीवन बरबाद चला गया। मनुष्य जीवन का पाना बड़े भागो से होता है। अगर यह काम नहीं हुआ, तो जीवन बर्बाद चला गया। What does it profit a man if he gains possession of the whole world and loses his own soul. क्या हुआ, सब चीज के मालिक हो, अगर तुमने अपनी आत्मा को नहीं जाना, अपने जीवन आधार को नहीं जाना। जीवन बर्बाद चला गया और यह काम केवल तुम मनुष्य जीवन ही में कर सकते हो और जूनी में नहीं। किसी समाज में रहो, मुबारिक हो। जरूर रहो।

अपने पिया संग होरी खेलूं , यही फाग रचो री ।

आपको पता है होलियों में फाग खेला जाता है। ले जाया करते हैं। अरे भई मेरी होली तो इसी में है कि मेरी आत्मा का प्रभु से विसाल हो, उसके साथ लगे। अरे तुम्हारे साथ होली खलेने से क्या है। समझे ! स्त्रियां एक दूसरे पर डालती हैं ना। भई आत्मा का सच्चा पति परमात्मा है।

मीराबाई सदा सुहागन, वर पाया अविनाशी ।

कहते हैं, मैं तो अपने पिया से, आत्मा प्रभु परमात्मा से होली खेली जा रही है, वह चाहिये। बाहर की होली का क्या काम ! कहते हैं असल महीना फागुन का यही है। फागुन इसी को कहते हैं, इसी का नाम होली है। अगर होली खेलनी है तो परमात्मा से खेलो। आत्मा का प्रभु से विसाल (मिलाप) हो, उसका रस मिले। किसकी सोहबत में खेली जाएगी ? जो उसका रस ले रही है। बस और क्या है ? यह है नजरिया अनुभवी पुरुषों का यहां इसलिये समाजों का जिकर नहीं। यहां तो आत्मा की लगन का सवाल है। जिसकी प्रभु से लगन बन गई, उसका जीवन सफल हो गया।

पांच सुहागिन होरी खेलैं, कुमति सखी से न्यारी ।

कहते हैं, कुमति खत्म हो गई। अब इनमें, जो पांच इन्द्रियां हैं, हरेक इन्द्री सुहागिन हो रही है. आंख उसी को देख रही है, कान उसी का नगमा सुन रहे हैं, जबान उसी का रस ले रही है, स्पर्श से आनन्द की लहरें उठ रही हैं। उसी की खुशबू फैल रही है. कुमति खत्म हो गई, सुमति आ गई। इन्द्रियां सुहागिन हो गई। जिसको देखना चाहें वह देख रही है। हर जगह वही देखने में आ रहा है, उसी का नग़मा (नाद) हर जगह हो रहा है। बस। आनन्द हो गया। यह

खेलो। आंख उसी को देखे, कान उसी के नगमें को सुने, जबान उसी का रस ले, स्पर्श उसी में आकर, उसके रस की लहरें तुम्हारे अन्तर उठे, तब तो हुआ ना। यह किसी अनुभवी पुरुष की कहानी है। जब यह गति बन जाती है उसको हर जगह वही नजर आता है।

वह Consmic consciousness में जाग उठता है और Cosmic consciousness में Super consciousness जाग उठती है कि वही सब जगह है।

कहें कबीर सुनो भई साधो आवागमन निवारी ।

कहते हैं, मेरी आत्मा की लगन उससे लग गई, इस तरह तुम्हारा आना जाना खत्म हो जायेगा। कहां जाओगे मर कर ? जिससे लगोगे ।

जहाँ आसा तहाँ बासा ।

तो महापुरुष क्या कहते हैं ? Don't speak of love, just realise it. अर्थात् प्रेम बातें न करो, प्रेम की लगन तुम्हारे अन्तर जाग उठे। किसी की ? दुनियां की लगन तो दुनियां में लायेगी। अगर उस परिपूर्ण परमात्मा का Contact (परिचय) किसी महापुरुष की सोहबत में मिलकर उसकी लगन लग जायेगी तो उसकी गोद में जाओगे। तो प्रेम की बातें बनाना छोड़ दो भई, Live करो, उसको, प्रेम का जीवन बनाओ। Love and all things shall be added unto you. प्रेम करना सीखो, सारी बरकतें मिलेंगी। परमात्मा प्रेम है। आत्मा उसकी अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है और उसको पाने का ज़रिया भी प्रेम ही है। जितने हम साधन करते हैं, जितने महापुरुषों की बाणियों का स्वाध्याय करते हैं, अगर पढ़ कर, साधन करते हुए, तुम्हारे दिल में उसके मिलने की चाह, तड़प, बन गई तो मुबारक हो, नहीं तो यह सब जमनास्टिकें हैं। पूजा पर बैठे, खुश्क बैठे, खुश्क उठ खड़े हुए। पाठ किया, खुश्क बैठे, खुश्क उठ गये। कोई लगन नहीं बनी, तो यह जमनास्टिकें हैं। न पढ़ने से पढ़ना अच्छा है भई, मगर पढ़कर उसका उभार, रंग आ जाये। तो बात यह है। इसलिये महापुरुष क्या कहते हैं ? Don't argue. बहस में (वाद विवाद में) मत जाओ भई। Follow the religion of truth and love. प्रेम और सच के पुजारी बनो। बस। फलाना Doctrine (सिद्धान्त, मत) ठीक है। भई सब मतों की बुनियाद यही दो हैं। जो Resolution (प्रस्ताव) हुआ World religion conference. अहिंसा प्रेम और अहिंसा एक ही चीज के दो Phases (पहलू) है। बस। हम एक ही Truth के पुजारी हैं। किसी समाज में रहो, इसी Common ground पर हम सब बैठ सकते हैं। बात तो यही है। बातें बनाना छोड़ दो कि लोगों से प्रेम करो। अरे भई खुद प्रेम करना सीखो। Live it. लोगों को कहना कि तुम दुविधा न करो, यह न करो, वह न करो, अरे भई खुद दुविधा छोड़ दो। ज़बानी बातें तो सब कोई कहता है। किसी भाई को खड़ा करो, यही बातें कहेगा। अरे भई देखना यह है कि वह Live भी करता है या नहीं।

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्धि विचार ।
कथनी छांड करनी करो तौ कुछ पाओ सार ॥

इसलिये हमेशा क्या करो, प्रेम की तरफ बहाव पैदा करो। किसी तरीके से भी आये, प्रेम की बात कहो भई। हाफिज साहिब से पूछा कि भई किसी जबान में कहो, प्रेम की कहानी सुनाओ ? कहानी न सुनाओ Live करो जब Live करोगे, सुखी हो जायेगा। Love beautifies every thing. बच्चा गंदगी से भरा पड़ा है। माफ़ करना, माता क्या करती है ? प्यार से धोती है, उसी को सीने से लगा लेती है। गन्दगी भरे को नहीं लगाती, साफ करके लगाती है। अनुभवी पुरुष का प्यार सबसे है। Love the sinner but hate the sin. पाप से तो घृणा करो मगर पापी से प्यार करो। नहीं तो उसके पाप कैसे धोयें जाऐंगे। तो बड़े प्यार से हमेशा यही समझाते हैं, कि करना क्या चाहिये। प्रेम करना सीखो। वह परमात्मा तुम में है! ग्रन्थों-पोथियों में उसका ज़िकर है। धर्म स्थानों में उसके गुणानुवाद गाए जाते हैं। हमारे दिल में सबके लिए इज़्ज़त है। मगर वह है कहां ? वह तुम्हारी आत्मा में है। जब तक बाहर से अन्तर मुख आप नहीं होते, दबी हुई चीज आती है और दबी हुई चली जाती है। हम भूखे के भूखे मर जाते हैं। सब महापुरुषों की हमेशा से यही तालीम रही है। न बदली है न बदल सकती है। इसलिए क्या करना चाहिए। ऐ इन्सान, तू तैयार हो जा यह अफसोस का मुकाम है, मनुष्य जीवन भी मिला और तूने बरबाद कर दिया। जिस काम के लिये मिला था वह काम न किया तो क्या हुआ। समाजों में भी दाखल हुए, जिस काम के लिए दाखल हुए वह चीज न मिली, प्राप्ति नहीं हुई। यह नहीं कि वहां तालीम नहीं है। तालीम सबमें है, मैं अर्ज करूंगा। अनुभवी पुरुष सब समाजों में आये हैं। अमल का सवाल हैं, करनी का भेद है। वह तो हम करते नहीं। उसका नतीजा क्या है ? वक्त जाया कर देते हैं, खाने पीने, एशो-इशरत विषय विकार में, आराम में बातें बनाने में अन्त समय आ जाता है। आखिर आना है। उस वक्त का पछताना किस काम का !

अब पछतावे होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत।

तो इसलिए महापुरुष इस बात पर जोर देते हैं कि भई क्या करो, प्रभु को याद करो। बाहरी आंखें देखती हैं, वह आंख बनाओ जिससे वह नज़र आता है।

नानक से अखड़ियां बे अन्न जिन दिसन्दो मापिरी ।

वह आंख, वह दिव्य चक्षु हैं। भगवान कृष्णजी फर्माते हैं। तुम मुझको इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से, जो मैंने तुमको बख्शा है। गुरु की हैसियत में समझा रहे हैं। आंख वह बनाऐं।

हर तुम में ज्योति धरी; हरि बिन अवर न देखो।

कान तुमको प्रभु ने दिए हैं। गुरु अर्जुन साहब फर्माते हैं -

ऐ श्रवणों मेरियो हर सरारे लाय सुनो सत बाणी ।

वह सत की बाणी जो हो रही है। कभी फ़ना होने वाली नहीं है। तुम में है, उसको सुनो। बाहर के रस-कस में ले रहे हो।

जवां तू इन रस राच रही तेरी प्यास न जाये।

बाहर के रसों से प्यास नहीं जायेगी। उस महारस परिपूर्ण परमात्मा के रस को पाकर सब रस भूल जायेंगे।

जब वह रस आवा सह रस नहीं भावा।

अरे भई, महापुरुष तो यही कहते हैं, इन इन्द्रियों को सुहागिन बनाओ। उसके देखने वाले बनो, उसके सुनने वाले बनो। उसके रस लेने वाले बनो उसके स्पर्श में आओ, First hand (व्यक्तिगत अनुभव से) उस हकीकत में जाग उठो, अपने आपको भूल जाओ। फ़ना-फी-अल्लाह (प्रभु में लीन) हो जाओ। बस। यह है आदर्श। अनुभवी पुरुषों ने, ख्वाहे किसी समाज में आये हैं, यह आदर्श हमारे सामने रखा है। हम इसको भूलते रहते हैं। महापुरुष इसको आकर ताजा करते रहते हैं। बस। It is nothing new, truth is old and truth is one. न बदली है न बदल सकती है। हमारे हजूर फर्माते थे कि न उसमें Addition हो सकती है अर्थात् न उसमें कुछ बढ़ाया जा सकता है न कोई Alteration (न कुछ बदली) हो सकती है।

प्रेम होवे तो हरि से प्यार होना चाहिये ।
प्यार होवे तो हकीकी प्यार होना चाहिये ।।

इस सिवा जितने हैं आशिक, उन पे रोना चाहिये ।
प्यार होवे तो गुरु से, प्यार होना चाहिये ।।

पहिले गुरु भक्ति करो, पीछे और उपाय ।
बिन गुरु भक्ति मोह जग, कभी न काटी जाय ।।

मोटे बन्धन जगत के, गुरु भक्ति ते से काट ।
झीने बन्धन चित्त के, करें नाम प्रताप ।।

मोटे जब लग जायें, नहीं झीने कैसे जायें ।
ताते सबको चाहिये, पहिले गुरु भक्ति कमाय ।।

इश्क होवे तौ गुरु से, इश्क होना चाहिये ।
इस सिवाय जितने हैं आशिक उन पे रोना चाहिये ।।

यहां पर इस भूल में मत रहना भई If you love me keep my commandments. क्राईस्ट कहता है, अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो। जिसम से मुहब्बत नहीं, जिसम उसने भी छोड़ना है, तुमने भी छोड़ना है। जो उसमें Power (सत्ता) काम कर रही है, उसके भक्त बनो। जिस तरह वह तुमको लगाता है वह काम करो। वह कहता है नेक-पाक बनो, इन्द्रियों के भोगों-रसो से ऊपर आओ। वह कहता है भजन करो, सदाचारी जीवन बनाओ। जितना तुम कहना मानोगे, यह सच्ची गुरु भक्ति है।

सतगुरु वचन, वचन है सतगुरु ।

जो वचन Charge करता है, वह सच्चा सतगुरु है। जो वचनों पर मत्था टेकता है उसी की अवश्य कल्याण है, जो जिसम को मत्थे टेकता है उसके लिये, ''हनोज दिल्ली दूरस्त'' अभी दिल्ली दूर है। बा अदब होना ठीक है, मगर सच्ची भक्ति इसी बात में है कि उसके वचनों पर फूल चढ़ाये जायें, मैं आपको मत्था टेकूं, आपका कहना न मानूं, फिर! मजाक करना है कि नहीं ? तो सच्ची गुरु भक्ति इसी में है कि वह जीवन जो तुम्हारा बनाना चाहता है, उस तरफ चल पड़ो। मदद मिलेगी ।

बीज बो कर फल है खाया खूब तुमने है यहां ।
आक़बत के वास्ते भी कुछ तो बोना चाहिये ॥
या तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे कम ख़ाब पर ।
सफ़र भारी सर पे है वहां भी बिछौना चाहिये ॥

यहां तो किया, कुछ आगे का भी करो। जाना है यहां से सबने। यह हमेशा रहने का मुकाम नहीं है।

है ग़नीमत उम्र यारो जान को जानो अज़ीज ।
रायेगां और मुफत में इसको न खोना चाहिये ॥
गरचे दिलवर साथ है बिन जुस्तजू मिलता नहीं ।
दूध से माखन जो चाहो तो बिलोना चाहिये ॥

इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। यह दरवाजा है। वह (प्रभु) तुम्हारे अन्तर में है।

तो Love करने का सवाल है, प्रेमी बनो, प्रेम को दिल में धारण करो। जीवन प्रेमी का बनाओ सारी बरकतें मिलेंगी। जो बातें सुनी हैं उनको जीवन में धारण करो, तुम्हारी कल्याण होगी। बाकी सब मिल बैठना सीखो। हम सब उसी एक के पुजारी हैं। सब गले लग कर बैठो। किसी समाज में रहो, कोई फरक नहीं। मिल बैठने में बरकत है। मिल बैठना सीखोगे तो बहुत सारी दुबिधाऐं दूर हो जायेंगी और हकीकत की समझ आने लग जायेगी। ❑